लव इन बी.एड.

हर्ट टू हर्ट स्टोरी...एज़ ए रियल लव

द रियल लव ...

कमिंग सून...

इन योर लाइफ...

Author ...... vinay bharat

विविधा सहित्य मंच की युवा लेखन प्रस्तुति....

विविधा - II

श्रृंगार से हास्य तक का सफर....

दिल की गली में हलचलों का नाम आहटें...

संचालक एवं संपादक - विनय "भारत"

विविधा ...// (प्रेम - महाविशेषांक)

(शृंगार से हास्य तक का सफर.....)

संपादक एवं संचालक -

विनय ''भारत''

उप -सम्पादक

विकास ''विद्यार्थी''

प्रचार - प्रसार एवं अन्य सहयोगी -

महावीर ''चंचल' (सवाईमाधोपुर)

विनोद तिवाडी (हिंडौन सिटी,करौली)

अजय याज्ञवलक्य (मथुरा)

धीरज कौशिक (जयपुर,दौसा)

मयूर शर्मा (गंगापुर सिटी)

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य व्यवसायिक ना होकर केवल साहित्यसृजन और मनोरंजन के साथ साथ हिंदी साहित्य को बढावा देना है इसमे कार्यरत सहयोगी अवैतनिक सेवारत है, प्रस्तुत रचनाऐं साहित्यकारों से प्राप्त रचनाएं है जिनका कोपीराइट रचनाकार और विविधा के पास है रचनाकार की अनुमती के बिना किसी भी रचना को नकल या तोड-मरोडकर प्रस्तुत करने पर हर्जे खर्चे के लिए स्वंय जिम्मेदार होंगे! सभी रचनाऐं इंटरनेट पर भी उपलब्ध है !संपादकऔर

किसी विवाद के किए उत्तरदायी नहीं!

गंगापुर नगरम्

माधोपुरेति विदिताखिल भारतिभि: !
आदौ सवाईपद संयुत मंडलेस्ति!!
गंगापुरेति बहु विश्रुत पत्त्नो वै !
धुन्धेश्वराख्यामर सिंधु पूतम!!1!!
यद्दक्षिणे योजन पंच दूरम!
देवाग्र पूज्य: भगवान गणेश:!!
विश्व प्रसिद्धे रण्थम्भ दुर्गे!
यदर्थिना काम वरं ददाति!!2!!
तथा च पूर्वे अस्ति गव्यूति दूरे!
विंध्याचलख्याचल श्रृण्खलासु!!
गिरि राज कन्या दुर्गावतीर्णा!
कैलाख्यया या व्ति भक्तवर्गम्!!3!!
श्री वासुदेव: मदन च मोहनेति!
ययाख्यया गतौ वै नगरीं करौलीम्!!
प्राच्योत्तरे क्रोश दश पंचके च!
उपासितो यादव वंश भूपै !!4!!
श्री राम रूपांकित शुद्ध चित्त:!
प्रामञ्जनि भक्त जनार्चितो वै!!
ग्रामे विनौरी पुर संज्ञके च!
आशां प्रतिची समलंकरोति!!5!!
इत्थं चतुदिक्ष्व वित्ते सुक्षेत्रे!
गंगापुरे पुण्य जनै रूपते!!
विद्यालयो संस्कृत शिक्षणाय !
आचार्य पर्यन्तमुपाधि लभ्य !!6!!

लेखक: - आचार्य- श्री हजारीलाल शास्त्री

विविधा ...// *(सहयोग - 20)*

तेरी हंसी ने हसीना सुन ऐसा खेल कर दिया!
हमें उसी क्लास में फिर से फेल कर दिया!!

प्रिय पाठकों ,

फिर से लेकर आए हैं हम हास्य की फुहारें ,शृंगार की बहारें विविधा- ii के साथ... ये है एक ऐसा संग्रह जिसे आप संभालकर रखना चाहेंगे... एक ऐसी उडान जो आपको मस्त बहारों का अहसास कराएगी...और इसमे हैं ऐसी रचनाएँ जो आपको दिल के हाथों मज़बूर कर साहित्य रस डुबकी लगवाकर छोडेंगी ! इस पुस्तक को कवि सम्मेलन जैसा मंच देने का प्रयास किया गया है सिर्फ आपके लिये.....
विविधा साहित्य मंच की ओर से यह अंक आपको घाट- घाट का सफर करवाएगा... ये आपको कहीं हंसाएगा ... तो कहीं आपको अपने प्रियतम की याद दिलाएगा... कहीं ये आपके दिमाग के घोडे दौडवाएगा... लेकिन कुछ भी हो.. पसंद ज़रूर आएगा.... जी हां, मित्रों पिछले अंक की तुलना में ये अंक है विशिष्ट पहचान लिये हुए... इस अंक में विशेष है हमारे आदरणीय अतिथि रचनाकार... जिनमे नारी-शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं - प्रियंका शर्मा ,गरिमा आर्य, पूनम शुक्ला, प्रज्ञा श्रीवास्तव ..
.हम विविधा साहित्य मंच की ओर से इनकी रचनाओं का

अभिनंदन करते हैं ...वहीं दूसरी ओर पुरूष वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए अपना वरद हस्त रखते हुए हमारे गुल्दस्ते में

विराजमान हैं - वरिष्ठ साहित्यकार यज्ञ शर्मा जी अपने व्यंग्य पकवान के साथ,... वहीं एक ओर गुलशन में उनके साथ बहार सजाए बैठे हैं राष्ट्रीय कवि गोपीनाथ चर्चित जी अपनी बेहतरीन आलराउंडर रचनाओं की गुगली के साथ इनका भी विविधा साहित्य मंच रचना सहित स्वागत करता है...
इसी क्रम में स्वागत है मशहूर कार्टूनिस्ट व्यंग्यकार मुकेश जी शर्मा का उनके व्यंग्य के साथ... और साथ ही स्वागत है शृंगार को हास्य में पिरोकर प्रस्तुत करने वाले दुर्गेश दुबे प्रेमीजी का... जिनकी रचनाऐं स्वयं उनका परिचय देती हैं ... सम्मान को आगे बढाते हुए स्वागत है-अतिथिगण राहुल सिंह शेष,मनोज शर्मा मुरैना, दीपक गौतम,आशु सिंह अमिट, महावीर चंचल , आशीष शर्मा इंतजार,विकास शर्मा विद्यार्थी, अवधेंद्र दाधीच,दीपक अवस्थी सूरगढ, .. का जिनकी रचनाओं से ये बाग लग सका...
सम्मानके क्रम में स्वागत है अपनी रचनाओं का राज्य में डंका बजाने वाले विशिष्ट रचनाकार विश्वम्भर पांडे व्यग्र , और हनुमान मुक्त जी का जो स्थानीय शहर के साथ साथ अपनी धूम इंटरनेट पर भी मचा चुके हैं विविधा साहित्य मंच की ओर से इन सभी का पुन: स्वागत और आभार...   विविधा ... ।।

ये सिर्फ पत्रिका नहीं है ये है एक काव्य मंच .....जो देगा आपको एक कवि सम्मेलन जैसा आनंद-........................

एक ओर जहां कवि चर्चित आपको गुदगुदाऐंगे,
यज्ञ जी आपकी मुस्कान दुगना कर जाऐंगे !
एक ओर पूनम जी बिखेरेंगी अपनी बयार....
दूजी ओर मुकेश जी देंगे मुफ्त की सलाह हर बार !
प्रियंका जी मां की ममता को बतलाऐंगी ,
दीपक जी की गजलें किसी की याद दिलाऐंगी !
युवा कवि महावीर करेंगे पत्नी का बखान,
आशीष जी दुनिया को बतला देंगे पहचान !
पांडे जी की रचना दिल का हाल बताएगी
मनोज जी की गजलें कुछ तो कहकर जाऐंगी !
प्रज्ञा जी की रचना भक्ति की शक्ति दिखलाऐंगी
गरिमा जी सबकी आखों से करूणा बरसाऐंगी !
राहुल जी आंखों को मंजर दिखलाऐंगे
दुर्गेश दुबे प्रेमीजी प्यार को दूर भगाऐंगे
और मुक्त जी उसी समय विवाह आंदोलन चलाऐंगे!
दीपक और अवधेंद्र जी की रचना प्रकृति की आभारी
विकास और विनय भारत की रचना पढेगी दुनियासारी !
साहित्य के रंग में रंगने को हो जाइये तैयार
विविधा लाई है आपके लिये साहित्य का संसार ***!!***

तो पढते रहिये और हाँ पहले की तरह अपनी प्रतिक्रिया देना ना भूलें आप अपनी प्रतिक्रियाऐं रचनाकारों को भी सीधे दे सकते हैं !

आपके पत्र , ई-मेल,साहित्य को एक नई दिशा देते हैं, आपकी प्रतिक्रियाऐं प्रत्येक साहित्यकार का एक किलो खून बढाएगी क्योंकि-

पैसों के लिए नहीं कलम उठाते हम ''भारत''
हम तो सिर्फ ज़िंदा रहने को ही लिखते हैं!
इसी आशा के साथ......

विनय '';भारत''

(संपादक एवं संचालक ... विविधा साहित्य मंच)

स्पेशल थैंक्स टू....(संपादक -व्यक्तिगत)

(इस पत्रिका में निस्वार्थ भावना से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अपना कीमती समय, सुझाव ,स्नेह, आशीष और सहयोग के लिये)

1. **राजेंद्र शर्मा** - अपने विशिष्ट आशीष और मार्गदर्शन के लिए!
2. **शीला शर्मा** - विशिष्ट स्नेह आशीष के लिए!
3. **राजेश शर्मा** (अध्यापक संस्कृत) - विशेष आशीष,मार्गदर्शन और सहयोग के लिए!
4. **गोपीनाथ "चर्चित"** - समय समय पर मार्गदर्शन हेतु!
5. **डा. मुकेश "शरमा"** - अपने अनुभवों और विविध प्रेरणाओं से पथ प्रदर्शित करने के लिये!
6. **विनोद तिवाडी** - अपने हर संभव प्रयास और सर्वाधिक स्नेह के लिए!
7. **सीमा शर्मा और माया शर्मा** - आशीष और स्नेह के लिए
8. **शशी शर्मा -** श्रेष्ठ मित्रता, स्नेह व्यवहार और रचनाओं का आधार बनने के लिए!
9. **जितेश पाराशर** - अभिन्न मित्रता और स्नेह के लिए!
10. **विकास" विद्यार्थी" -** विविधा प्रथम के लोकार्पण,अनमोल साहित्य प्रदान करने, श्रेष्ठ मित्रता, और समय समय पर विशिष्ट मार्गदर्शन और कीमती समय देने के लिए ,
11. **पूनम सैन -** हमेशा एक भाई के लिए सहयोग करने को तत्पर रहने और अपार स्नेह के लिए !
12. **सलोनी शर्मा -** हमेशा हास्य व्यंग्य और शरारती माहौल बनाने के लिए (उंगली बहिन को)
13. **आशीष इंतजार (उदेइ)** -समय पर विशिष्ट सहयोग के लिए !
14. **अजय याज्ञवल्क्य** -प्रचार-प्रसार और प्रेम व्यवहार क्रे लिए!
15. **गिरीश शर्मा** - प्रचार -प्रसार हिंडौन क्षेत्र के लिए !
16. **धीरज कौशिक** - जयपुर में विशिष्ट सहयोग, स्नेह, व्यवहार के लिए !
17. **दीपक कौशिक** - वाहन और समय देने के लिए !
18. **विजय पंडित** - शादी करने के लिए!
19. **धर्मेन्द्र शर्मा (पूर्व प्राचार्य,और अध्यक्ष भारत संस्कृत परिषद गंगापुर सिटी) -**समय समय पर सहयोग करने के लिए!
20. **महावीर "चंचल"-** सवाई माधोपुर प्रचार प्रसार के लिए
21. **शास्त्री द्वितीय वर्ष- 2014-015 -** संपूर्ण कक्षा की पागल -- पंतियों और हास्य के माहौल के लिए !
22. **भारती शर्मा** -समय समय पर विविध सहयोग के लिए!
23. **मयूर शर्मा** - पढाई से अधिक डांस करने के लिए !
24. **निषिता -** प्यारी सी भांजी को शरारत करने और मुझे न भूलने के लिए !
25. **गुंजन याज्ञवलक्य -** मथुरा मे प्रिंटर पेज़,नाश्ता- पताशी आदि सहयोग क्रे लिए!
26. **गौरी और तान्या शर्मा -** अच्छे व्यवहार के लिए!
27. **वासु शर्मा - संगीता शर्मा -** हमेशा सहयोग के लिए!
28. **दिवाकर भारद्वाज -** बस स्टैंड पर बार बार और शहर में समय देने के लिए!
29. **लवानिया फोटो स्टेट-** समय समय पर सहयोग के लिए!
30. **हेमलता गोयल -** बी. एड में सहयोगके लिए

अन्य मित्र मंडली - आरती गौतम , विक्रम राठौड ,स्वाति ,अनुप्रिया शर्मा, प्रियंका शर्मा (जयपुर), प्रफुल्ल नरवर,रविकांत शास्त्री (मथुरा), अशोक मीणा, अशोक खंडेलवाल, उमा पाराशर, मिस खान, चेतन शर्मा (बरवाडा), जितेंद्र गुप्ता, सुनील वर्मा, गजानंद शर्मा, पवन शर्मा, राजेश पाराशर(राज प.),आशीष भारद्वाज,निशा गौतम, आदि... सभी को..... धन्यवाद..........

Facebook - rahulsinah0303@amail.com

जाने- माने सहित्यकार **राहुल शेष** एक अच्छे लेखक होने के साथ साथ गजलकार भी हैं, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपते-छपते कुछ सहित्य के सम्मान भी ले चुके हैं,इनकी मधुर रचना सुनने के बाद कुछ कहना भी शेष नहीं रहता **- संचालक**

गजल.................................

शायद तेरी आँखों ने वो मंजर नही देखा !
तन्हाइयों में तूने कभी रहकर नही देखा !
है दर्द में मज़ा क्या, कैसे जानोगे तुम ,
दर्द-ए-मुहब्बत तूने सहकर नही देखा !
कुछ लोग ही मिलते है मुस्कुराते हुए ,
वैसे तो सबको मिलते हंसकर नही देखा !
मेरे लिए दुआ है तेरी हर बात ही ,
तूने ही मुझसे कुछ भी कहकर नही देखा !
रोज़ ही मिलता हूं एक नये शख्स से ,
फिर भी कोई तुमसा बेहतर नही देखा
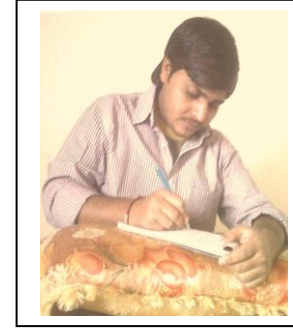
राहुल 'शेष'

ग्राम+पोस्ट -राजगढ़,

जिला-प्रतापगढ़(उ.प्र.)

मो.न.-09015573798

गजल......................

ज़ख्म सीने का सबसे छुपाता रहा !
नाकाम कोशिश रही वो याद आता रहा !!
लौट आयेंगे वो यही सोचा किये ,
सोचकर मैं यही उनको बुलाता रहा !!
मेरे टूट जाने से वो खुश हुए
इसलिए ही तो मैं टूट जाता रहा !!
दर्द में भी सुकूँ ढूंढ़ लेता हूँ मैं,
बस ख़ुशी के लिए चोट खाता रहा !!
चलो 'शेष' अब तोड़ देते हैं हम,
कई जन्मों का था जिनसे नाता रहा !!

Facebook - /   vikas kumar sharma

युवा विद्यार्थी विकास एक साहित्यकार होने के साथ साथ अच्छे शिक्षक भी हैं, वे ज्ञान में हिंदी साहित्य की गहराई नाप चुके हैं! एम.ए.,एम.एड. विकास दूरदर्शन,आकाशवाणी के साथ ही प्रिंट मीडिया पत्रिका,भास्कर आदि में समय-समय पर प्रकट होते रहते हैं.   **- संचालक**

एक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ....

एक बार तुम्हें पा जाऊं मैं

दिलदार तुम्हें पा जाऊं मैं

तोड के सारे मिथ्या बंधन

सरकार तुम्हें पा जाऊं मैं

ये गगन - धरा ,ये चांद सितारे

नहीं देते कोई तुम्हारा पता

नित्य की आपा धापी मे

बीत रहा जीवन सारा

विकास' विद्यार्थी -:

शिवपुरी-बी,सालोदा मोड गंगापुर सिटी ज़िला सवाईमाधोपुर(राज)-322201

मो.न.- 07665150750

यादों की रुनझुन -रूनझुन में

विस्मृत कर दूं मैं जग सारा

उस प्यारी मोहनी मूरत का

दीदार कहीं पा जाऊं मैं

एक बार तुम्हें पा जाऊं

मैं कर दूं न्यौछावर कोटि कुंज

मुक्ता - मणियों के राजमहल

हर भोग लगे मुझको नश्वर

आती हो केवल तुम्ही नजर

जीवन के सभी झमेलों को

बार- बार विसराऊं मैं ,

प्रिये,

यदि एक बार तुम्हे पा जाऊं मैं !

Facebook - poonamashukla60@gmail.com

अपनी कविताओं से साहित्य सुगंध विखेरने वाली रचनाकारा **पूनम शुक्ला** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी कलम का जादू विखेर चुकी हैं, एम.एस.सी ,एम.सी.ए. की शिक्षा लेकर सहित्य लिखते- लिखते इनका अनुभव प्रकाशन, गाज़ियागाज़ियाबाद से ''सूरज के बीज'' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है! - **संचालक**

..........फेसबुक की खिड़की............

चेहरों की किताब है ये, अनगिनत पन्नों में

चाँद से चमकते चेहरे , अनगिनत पन्नों में

शेर,कलाम,मिसरा,कविता ,धूम मची है कितनी

घूमते अनगिनत कलाम, अनगिनत पन्नों में

एक पल में दिल की बातें ,जातीं पहुँच इतने दिल में

जैसे खुली हो दिल की किताब ,अनगिनत पन्नों में

कभी ध्रुव कभी शम्भू, कभी दीपक कभी अशोक

जलाते दिल का चिराग, अनगिनत पन्नों में

ये फेसबुक की खिड़की है, नित नई बहार लिए

नित नए- नए रूपों में ,अनगिनत पन्नों में

जब घुटें साँसें मेरी, खोल दूँ ये खिड़कियाँ

देख पूनम ठंढ़ी बयार, अनगिनत पन्नों में!!

पत्नी और कश्मीर................

50 डी ,अपना इन्कलेव ,रेलवे रोड,गुड़गाँव - 122001

तू हसीन है थोड़ी नमकीन है,

कश्मीर की कली जैसी बड़ी गमकीन है

अपनी बीबी को पति लगा रहा था मस्का

तभी उसका पड़ोसी वहाँ आ धमका ।

सचमुच भाभी जी की आँखें मारती तीर हैं

मैं नहीं अकेला अभी फ़िदा और तीन हैं

।अब पति को गुस्सा आया

रुक बताता हूँ तुझे थोड़ा गरमाया ।

तू पड़ोसी है पड़ोसी की तरह ही रह

ताँक-झाँक कम कर अपनी हद में रह

ये मेरी पत्नी है बिल्कुल कश्मीर सी

आँखें उठाईं तो उठ जाएगी शमशीर भी

ए पड़ोसी अपनी औकात में रहना

Facebook - pragya121172@rediffmail.com

देश का है गहना

अपने ब्लोग के माध्यम से अंतर्जाल पर साहित्य पुष्प बरसाने वाली **रचनाकारा प्रज्ञा श्रीवास्तव** की रचनाऐं पाठकों पर अपना प्रभाव छोडती हैं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित उनकी रचनाओं को फेसबुक, हिंदी साहित्य.ओआरजी.आदि पर काफी पसंद किया जाता हैं! - **संचालक**

मंच की मल्लिका मैं बन ना सकी

कदरदान मुझको कोई मिल ना सका
तनहाईयों में जीती रही उम्र भर
उम्र सदियों सी मुझको लगने लगी
जिसने रचा था मुझे प्यार से
साथ उसने भी मेरा निभाया नही
लहरों सी उठती रही पर मगर
हाथ थामा किसी ने भी मेरा नही
तड़पती रही कसमसाती रही
जंग फिर भी मैं अपनी लड़ती रही
फिर हुई एक सुबह धूप खिलखिला उठी
चूम कर हाथ किसी ने फिर थामा मेरा!!

मैं हूं ना..........

मैंने कहा दुनिया मे सच नही है झूठ ने कहा मैं हूँ ना
नेता ने कहा वोट नही है वादों ने कहा मैं हूँ ना
पापा ने कहा घर पर मम्मी नही है
पडोस वाली आँटी ने कहा मैं हूँ ना

मन की किताब के कुछ पन्ने ....

कही पे है खुशियां खुद को समेटे
और गम हैं देखो चादर में लिपटे
सलवटें हजारों दर्द की
पड़ीहैं
आशा की किरण पट खोले खड़ी है
खिड़कियों से उमंगें पवन बन के आती
देखो झरोखों से फिर जा रही हैं
कमरे के कोने में छिपी बैठी चाहत
लाल सुर्ख साड़ी में मुस्कुराहट शरमा रही है
हंसी फूलों में खिलखिला रही है!!
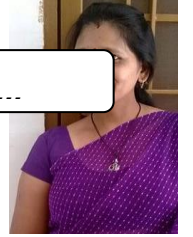
प्रज्ञा श्रीवास्तव

एक प्रार्थना..............................

कण-कण में भगवान समाया तुझमें मुझमें राम समाया
फिर क्या अंतर रह जाता एक साधु और शैतान में
काया अलग-अलग है फिर भी उनमे छिपी हुई है तेरी माया
किया वही उन दोनों ने जो तुमने उनसे करवाया
ऐसा क्यूं है, क्यूं होता है मेरी समझ मे कुछ नही आया
तुम कर्ता हो करने वाले हम पहचाने कैसे
कब करना है, क्या करना है जाने हम ये कैसे

पता-191\56 प्रताप नगर ,सांगानेर , जयपुर, राजस्थान

हम करते हैं वैसे ही तुम करवाते जैसे

Facebook - / viswambhar pandey vyagra

विविध साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित **विश्वम्भर पांडे 'व्यग्र'** विविध पत्र- पत्रिकाओं से प्रकाशित होने के पश्चात साहित्य लेखन की ओर निरंतर अग्रसर हैं,'व्यग्र' अंतर्जाल पर भी अपनी नई पहचान बना चुके हैं इनका ''कश्मीर'' पर एक खंडकाव्य भी प्रकाशित हो चुका है! - **संचालक**

गजल..................

दिल में आके बैठ गये कब, ना हमको पता चला
क्या कहें कहते ना बना ,
जब इसका पता चला
क्या होता है प्यार-व्यार, हमको अहसास न था
एक दिन वो मुस्कुराए, तो हमको पता चला
तन्हा- तन्हा जिंदगी , कब गुलजार हो गई
उसका मिला जो साथ तो हमको पता चला
कुछ तो वजह होगी उसके हमारे मिलन की
आंगन में खिला फूल ,तो हमको पता चला
जीवन पे लिखूं गीत या रखूं सरगम पे अंगुलियां
होठों से स्वर फूटे उसके,तो हमको पता चला
कब गुजर गया सफर तेरे संग साथ में
जब आ गया मुकाम तब हमको पता चला
ढेरों खुशियां आई मगर, अनजान रहा 'व्यग्र'
निकल चुका जब तीर , तब हमको पता चला

..................गजल

बहुत अब तक तुम छ्ले ये जान कर
अपने पराये की तू अब पहचान कर
नहीं होता 'हेममृग' सब जानते,
राम धोखा खा गये उसको नियति मानकर
जो बोया तुमने भला, उसे ही तो काटना
सह रहे क्यूं बोझ चिंतओं का गलती मानकर
विडम्बना है कैसी ,सुख की चाह में
,ढूंढते है वो उसे देखो बंदूकें तान कर
जो कभी थे हमारे हमसफर हमराज भी
फेर उसने मुख लिया ना जानते पहचानकर
दिन में किए जो काम उनका बोझ लादे हैं सभी
सो ना पाते रात में 'व्यग्र' खूंटी तानकर

ब्लोग - खाली - पीली

विश्वम्भर पाण्डेय "व्यग्र"
...र्मचारी कॉलोनी,
...गंगापुर सिटी मोबा.— **9549165579**

वरिष्ठ साहित्यकार एवं व्यग्यकार यज्ञ शर्मा की कलम जब चलती हैं तो पाठ... साथ- साथ इंटरनेट पर भी अपना लेखनी चलाकर साहित्य निर्माण में पिछले 40 वर्षों से निरंतर सृजन कर रहे हैं! इनका हास्य व्यंग्य संग्रह "सरकार का घड़ा **प्रकाशित हो चुका हैं . संचालक**

कश्मीर हिंदुस्तान में है। इसलिए, पाकिस्तान बड़े फ़ायदे में है। क्योंकि, कश्मीर के हिंदुस्तान में होने से पाकिस्तान के पास कुछ बोलने को है, करने को है और कुछ खेलने को भी है। जी हां, कश्मीर पाकिस्तान के लिए एक खेल है। इस खेल का नाम है– 'रिले रेस कश्मीर'। पाकिस्तान की हर सरकार यह खेल खेलती है। पाकिस्तान में तीन तरह की सरकारें बनती हैं– इस पार्टी की, उस पार्टी की या फौज की। जो भी गद्दी सभांलता है, कश्मीर के नाम का बेटन उठाता है और 'रिले रेस कश्मीर' शुरू हो जाती है।

कश्मीर हिंदुस्तान में है, इससे पाकिस्तानी नेताओं की सेहत दुरुस्त रहती है। शायद आपने देखा होगा पाकिस्तान में दुबले–पतले मरगिल्ले से नेता नहीं होते। उनकी सेहत का राज है कश्मीर! कश्मीर उनकी खुराक है, टॉनिक है, कसरत है। पाकिस्तान का हर नेता 'रिले रेस कश्मीर' खेलता है। रिले रेस में बेटन एक खिलाड़ी द्वारा दूसरे खिलाड़ी को दिया जाता है। पाकिस्तान में दिया नहीं जाता, छीना जाता है। जो बेटन छीन लेता है, रिले रेस दौड़ने लगता है। पता नहीं पाकिस्तान में आर्थिक, सामाजिक और व्यापारिक विकास की ओर कोई देखता है या नहीं, लेकिन कश्मीर की ओर सब देखते हैं। कश्मीर पाकिस्तान का सावन है। कश्मीर के अंधे को कश्मीर ही कश्मीर दिखता है। कश्मीर हिंदुस्तान में है, इसलिए पाकिस्तानी फौज बड़े फायदे में है। उसका रौब कायम है, मरदानगी कायम है, पाकिस्तान पर कब्ज़ा कायम है। कश्मीर पाकिस्तानी फौज को अपने सिक्स ऐब्स और बाइसेप्स दिखाने का मौका देता है। वैसे, उससे अच्छे ऐब्स और बाइसेप्स तो अपने शाहरुख खान के हैं। कश्मीर है तो पाकिस्तानी फौज के पास करने को कुछ है। नहीं होता तो फौज क्या करती? बस यहां से वहां परेड करती घूमती।

यज्ञ शर्मा
बी–10 ए जमुना दर्शन,
बॉगड़ नगर, गोरेगॉव
(पश्चिम) मुम्बई
मोबा.— **09987034530**

लेकिन पाकिस्तानी नेता खूब अबाउट टर्न करते हैं। जब भी नया नेता सरकार बनाता है, पहले तो वह ऐसा दिखाता है जैसे हिंदुस्तान से दोस्ती करेगा। जैसे ही हिंदुस्तान कदम आगे बढ़ाता है,

रिले रेस कश्मीर...(हास्य-व्यंग्य)

पाकिस्तानी नेता अबाउट टर्न कर जाता है। लगता है अबाउट टर्न पाकिस्तान की आदत बन गयी है। ऐसा वह सिर्फ़ हिंदुस्तान के साथ नहीं करता, दूसरों के साथ भी करता है। मसलन, पहले अमरीका से पैसे ले कर आतंकवादी तैयार किए। जब वे आतंकवादी खुद पाकिस्तान पर भारी पड़ने लगे, तो पाकिस्तान ने अबाउट टर्न किया और आतंकवादियों को मारने के नाम पर फिर अमरीका से पैसे लिए। आतंकवादी बनाने के डॉलर भी अमरीका से, और मारने के भी अमरीका से। पाकिस्तान तो कमाल है, उसने तो अबाउट टर्न को फ़ॉरिन एक्सचेंज कमाने का ज़रिया बना लिया। वैसे, बार–बार अबाउट टर्न करने में एक जोखिम है। कहीं ऐसा न हो कि बाकी दुनिया पाकिस्तान को अबाउट टर्न देश कहने लगे।

कश्मीर हिंदुस्तान में है, इसलिए पाकिस्तान में टांगें सलामत हैं। दोनों की टांगें– डेमोक्रेसी की भी और फ़ौज की भी। पाकिस्तान में सरकार अकसर टांग मार कर बनायी जाती है। पहले डेमोक्रेसी के ज़रिये सरकार बनती है। फिर फौज डेमोक्रेसी को टांग मारती है। उसके बाद फौज राज करती है। जब विदेशी ताकतें फौज को टांग मारती हैं, तब चुनाव होता है। और, फिर से डेमोक्रेसी आ जाती है। पाकिस्तान में बदलाव टांग मार कर ही आता है। जिसे टांग मार कर हटाया जाता है, अकसर उसे विदेश भेज दिया जाता है। पाकिस्तान के कई बड़े नेता और जनरल इसी तरीके से विदेश गये। शायद टांग मारना पाकिस्तान की विदेश नीति का हिस्सा है।

कश्मीर हिंदुस्तान के पास है, इसलिए पाकिस्तान के मुंह में जबान है। उस जबान से सिर्फ एक शब्द निकलता है– कश्मीर। सुबह कश्मीर, शाम कश्मीर। नाश्ता कश्मीर, डिनर कश्मीर। गृह

Facebook - / garima aarya

वर्तमान पर अपनि गद्य कविताओं से कटाक्ष कलम चलाने वाली रचनाकारा **गरिमा आर्य** देश की विसंगतियों पर कलम चलाने के साथ-

...................................12...............विविधा ...भाग - 2.............

करती हैं - **सचालक**

एक निर्मल प्रार्थना...

उतराखण्ड खण्डखण्ड हुआ चहुँ ओर है द्दाई उदासी
भक्तगण मन में सोचें अब कैसे जाएँ केदारनाथ या काशी
उन भक्तों के मन में एक नया विश्वास जगाने को
हे भगवन स्वयं ही नीचे उतरो अब इनकी जान बचाने को
ऐ बादलों कुद्द देर और न बरसो ज़रा अभी थम जाओ
इन मासूम भक्तगणों पर ज़रा सा तुम तरस तो खाओ
आए थे भगवन के दर्शन को ले ये मन में श्रद्धा अपार
न जाने वो कौन अधम था जिसके कारण मचा ये हाहाकार
उस अधम की भरपाई तो पहले ही कर चुके हैं भक्त हज़ार
अब बचे हुए भक्तों की कम से कम कर दो नैय्या पार
हो गए हो जो भारी पानी से तो चलो न ऐसे गाँव
जहाँ किसान हैं आस लगाए तुम कब रखोगे पाँव
खुशियों के हो दूत कहाते क्यों करते हो नाम खराब
बहुत हुआ अब बंद करो निर्मल पानी का शैतानी सैलाब
कितने ही परिजन फंसे हुए हैं इस आपदा की मार में
चीखें उनकी दिल को चीरें इस मचते हाहाकार में
अपने क्रोध को शांत करो और रोको इस उफ़ान को
इन लोगों से कैसा बदला माफ़ करो इन भोले नादान को
रोकना ही है तो रोको प्रकृति से बढ़ती द्देड़द्दाड़ को
ताकत अपनी उसे दिखाओ जो इस ताकत से अनजान हो
दोषी को ही मिले सज़ा कर ऐसा कुद्द प्रावधान दो
निर्दोषियों की जान बचा लो तुम तो परमात्मा की संतान हो।

गरिमा आर्य

सम्पर्क- 8

,,ब्लोक /

मेरठ रोड

नारी सब पर भारी

नारी और पुरूष की दौड़ में जीत रही है नारी
अबला बेचारी कहलाते कहलाते आज वो अबला पड़ गई सब भा[री]
पुरूष बेचारा बन गया है देखो भीगी बिल्ली जरा नहीं कर सकता बेचारा चिल्लम चिल्ली
खड़ी हुई है फौज़ में नारियों की संस्था नही रही अब नारियों में पति धर्म की निष्ठा
जरा जो उॅंचा बोले बीवी उसको ऑखें दिखाए दान दहेज के और प्रताड़ना के आरोप लगाए
यूॅं तो करते नारीवाद की बात गर्व से आज के धर्माधिकारी
पुरूष का दुखड़ा कोई न सुनता जोकि अबला को सबला करने में हो गया एक भिखारी
पुलिस में भर्ती होकर देखा वहाॅं भी पलड़ा हलका ही देखा
सिर पर आ बैठी सुपरिटेंडेंट एक नारी जिसने घर की सारी भड़ास हम पुरूष पुलिस पर उतारी
नारी और पुरूष की जीत रही है सोचा चलो चिकित्सक बन जाए शायद यहाॅं पर किस्मत बन जाए
भर्ती हुई एक महिला नेता ज्यों ही अस्पताल का बिल उसने देखा
उसके आरोपों ने हाय सारी की सारी इज़्ज़त वहीं उतारी
अब क्या कहूॅं मैं यारों तुमसे अबला बेचारी का रूप धरे ही नारी सब पर पड़ गई भारी
लगा ये सारी पति पीड़ित हैं चलो इनका दुख हलका कर दूॅं
एक अच्द्दा पति बनकर मैं जग में इनका जीना आसां कर दूॅं
मैं शादी कर बीवी घर लाया उसने मुझ पर यूॅं हुक्म चलाया और बोली
मत रखना मन में कोई दुविधा कि मैं हूॅं कोई बेचारी
मैं एक सबला सशक्त नारी हूॅं जो होती है सब पर भारी
आज समझ में आया यारों क्यों पति बेचारा होता है
क्यों वो सबको दिखलाना चाहता है नारी का असली रूप
खुद को अबला कहते कहते वो ले बैठी है माॅं चंडी का रूप
अब मैं तो इतना कहता हूॅं जब भी बड़े हो जाओ तुम
ब्रह्मचारी का व्रत लेकर बस वन में ही बस जाओ तुम ।।वन में ही बस जाओ तुम

पत्रिका,भास्कर ,जैसी विविध पत्रिकाओं से विगत 20 -25 वर्षों से अपने कार्टून व्यंग्य से अपनी चित्रकारी कलम का लोहा मनवाने वाले मशहूर कार्टूनिस्ट **मुकेश "शरमा"** एक अच्छे व्यंग्यकार और चिकित्सक हैं - **संचालक**

मुफ्त की सलाह (हास्य - व्यंग्य)...मुकेश "शरमा"

हमारे देश में बहुत सी चीजें मुफ्त में मिलती है! जिनमें से एक है - मुफ्त की सलाह !

जी हॉ ,ये सोलह आने सच है! यदि आपको किसी विषय पर सलाह लेनी है तो वह आपको मुफ्त मे मिल जाएगी! एक रुपया खर्च करने की आवश्यकता नहीं हैं! और ना ही जान- पहचान की ज़रूरत होती है! ये सुविधा हमारे देश में ही उपलब्ध हैं ,अन्य देशों में ऐसा नही है! आपको किसी विषय पर सलाह लेनी हो तो आपको सिर्फ घर से निकलना होगा! फिर देखिये आपके इर्द -गिर्द सलाहकारों की भीड ऐसे लग जायेगी जैसे मंत्री के आगे चमचों की भीड लगि रहती हैं और उन सलाहकारों में सलाह देने का जुनून ऐसा देखने को मिलेगा मानों उन सभी ने उस विषय में पी.एच.डी. कर रखी हो!आपको तो सिर्फ उन्हें चाव से सुनते रहमना होगा!

सलाह देने वाले घर से क्या उद्‌देश्य लेकर निकले थे ,वे इस बात को भूल जायेंगे और आपको सलाह तब तक देते रहेंगे जब तक कि आपके चेहरे पर संतुष्टि के भाव नहीं देख लेते! और जब उन्हें लगेगा कि सलाह देने में कोई कमी रह गयी है ,तो उस कमी को दूर करने के लिये विभिन्न प्रकार के उदाहरण भी आपके सम्मुख पेश करते रहेंगे!

उनकी सलाह सुनते - सुनते भले आप थक जायेंगे परंतु सलाहकार कभी नहीं थकेंगे! सलाह देकर एक जाने लगेगा बदले में पांच नये आप से जुड जायेंगे! इनमे से कुछ शक्ल आपकी जानी -पहचानी होगी तो कुछ अनजानी! आपके इर्द- गिर्द भीद में कुछ सलाहकार ऐसे भी होंगें जो आपको सलाह देते -देते बीडी- सिगरेट- तम्बाकू-चुर्री-चुट्की खाने पीने का ऑफर भी देने लगेंगे! यदि आप कोई नशा करते हैं तो मुफ्त की सलाह के साथ-साथ मुफ्त में आपका ये शौक भी पूरा करते रहेंगे! यदि आस- पास कोई टी -स्टाल है तो आपको मुफ्त में चाय (कट) भी पीने को मिल जायेगी! कह्ने का मतलब ये है कि मुफ़्त की सलाह लेने में किसी प्रकार का कोई घाटा नहीं है बल्कि फायदा ही फायदा है.. यदि कभी आपको टाइम पास करना हो तो किसी गली मोहल्ले या चौराहे पर जाकर ये फार्मूला आजमाइये! आपका टाइम पास भी अच्छे तरीके से हो जायेगा, आपके अपने शौक की पूर्ति हो जाएगी सो अलग! ... प्रिय पाठकों, आपसे एक बात और कहना चाहुंगा ..यदि आप को ऐसा लगता है कि समाज में पहले की अपेक्षा आत्मीयता मे कमी आ गयी है तो मुफ्त की सलाह वाला फार्मूला चौराहे पर आजमाकर देख ही लें आपकी धारणा सिरे से गलत साबित हो ही जायेगी क्योंकि हाथ कंगन को आरसी क्या और पढे लिखे को.....

डा. *मुकेश शर्मा*

बरपाडा, हिण्डौन सिटी,करौली(राज.)

9887990065

उभरते हुए युवा साहित्यकार **महावीर चंचल** की रचनाओं पर रजस्थानी भाषा की महक देखते ही बनती हैं - **संचालक**

पति रो बखान(गीत)

म्हारी दौराणी रा जेठ
म्हानै ल्यादे चूड़ा रो सैट
म्हारी नण्दिरा रा वीर
म्हारा घणा बदन रा सीर
ओ म्हारा देवधणी भरतार
तू म्हानै बडो प्यारो लागे रे...
म्हारी जैठाणी रा देवर
महानै ल्यादे सारा जेवर
महारा ससुराजी रा पूत
महनै ल्यादे चोको सो सूट
ओ म्हारा देवधणी भरतार
तू म्हानै बडो प्यारो लागे रे...
म्हारा घणा प्यारा भरतार
म्हानै ल्यादे सारा सिणगार
म्हारी सासूजी रा बेटा
म्हानै ल्यादे मथुरा रो पेडा
ओ म्हारा देवधणी भरतार
तू म्हानै बडो प्यारो लागे रे...
म्हारी मम्मी जी रा जंवाई
म्हासू मत करजो थै लडाई
म्हारा जेठजी रा भाई
म्हानै कर दिज्यो थै भरपाई
ओ म्हारा देवधणी भरतार
तू म्हानै बडो प्यारो लागे रे...

पति- पत्नि संवाद(शादी के कुछ साल बाद)

पत्नि-

मैं चाहती हूं तुझको लेमन फोन की तरह
तू छा गया है मुझपे टेलिफोन की तरह
ओ ओ मेरे यार... रावण पति.......
मैं चाहती हूं तुझको सिमकार्ड की तरह
तू छा गया है मुझपे फेसबुक की तरह...
मैं चाहती हूं तुझको शुगरकेन की तरह
तू छा गया है मुझपे सिगरेट पेन की तरह
मैं चाहती हूं तुझको पेटीकोट की तरह
तू छा गया है मुझपे लहंगेदार की तरह
ओ ओ मेरे यार...करमजले डियर रावण पति.......

पति -

मै चाहता हूं तुझको मेमोरी कार्ड की तरह
तू लिपट गयी है मुझपे अमरबेल की तरह
ओ ओ मेरी यार... मंदोदरी
मै चाहता हूं तुझको सेन्टर फ्रेश की तरह
तू छा गयी है मुझपे शाहीड्रेस की तरह...
मै चाहता हूं तुझको गेंदा फूल की तरह
तू छा गयी है मुझपे मकरंद की तरह
मै चाहता हूं तुझको कोल्ड बार की तरह
तू नाच रही है मन में डिस्को बार की तरह
ओ ओ मेरी यार...करमजलि..डियर. मंदोदरी

पता- ग्राम पो.- नायपुर, तहसील- खंडार,ज़िला- स्वईमाधोपुर (राज.)-322025

Mob. - 8239583702

विविध पत्र पत्रिकाओं में छपने वाले शिक्षक व साहित्यकार **दीपक गौतम** एक अच्छे गजलकार भी हैं, उनकी गजल और रचनायें पाठकों को छू कर गुजर जाती है जैसे- कोई मंद- मदमस्त हवा का झौंका**....संचालक**

गजल........ मैं कभी ,तुम कभी.......

मैं कभी तुम कभी ,शाम डरी- डरी कभी
चेहरे के टुकडे गीले से, आंखे भरी -भरी कभी
स्वप्न मे तेरा चेहरा ,देखा धुंआ- धुंआ कभी
रतजगे तेरी यादों के ,आंखें जगी जगी कभी
हाथ पे लिखा वो नाम तेरा जब भी मिटा- मिटा कभी
हृदय की दीवारों में चीख उठी -उठी कभी
वज़ूद नहीं मिलता मेरा ,जो हुआ जार -जार कभी
दर्पण में ढूंढा करता हूँ ,चेहरा बार- बार कभी
चांद कभी वो दाग कभी ,उसकी बात-बात कभी
तेरी याद नीदों को लेकर , खोयी रात- रात कभी

लक्षमी निवास,169,जनकपुरी,
हाऊसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर(राज.)

मो.- 9414224282

दीपक गौतम

रजनी...

मैं,
नहीं देख पाया
उसे;
कब उसने स्वप्न में
अधिकार कर लिया
कब उसकी अल्हडता
मेरा कुछ ले गई
वक्त के लम्हें
सालों में जकड गये
और मैं
घिरता गया
अपनी आंखों में
जिंदा
उसकी यादों में
बैचेन हवायें
डूबाती रही, मुझे
कांच के घेरों में
और,वो
फैलती रही
रजनी बनकर
धीरे- धीरे
अथाह...

उभरती नवीन रचनाकारा **प्रियंका शर्मा** एक शिक्षक होने के साथ- साथ गध कविता लिखकर साहित्य जगत में हस्तक्षेप रखती हैं, उनकी कविताऐं संदेश देकर ऐसा कुछ बोलने कि कोशिश करती हैं जो साहित्यके लिये अनुपम धारा का संकेत देती है - **संचालक**

चिंता उसको अपने बच्चे की ,
हर आहट पर जगती माँ
जतन निंदिया आने का करती
हर रात सुनाती लोरी माँ
कभी टूटने नहीं वो देती
हर हार को जीत बनाती माँ
नहीं मांगती कर्ज़ दूध का
सर्वस्व लुटाती है बस माँ
जब भी आंसू बहते तेरे
आंचल में ढक लेती माँ
जब भी खो जाता दुनिया में
हर मोड पे राह ताकती माँ
जीवन जीना सिखलाती है
कभी नीम तो कभी शक्कर है माँ
तेज़ जेठ सी गर्मी तपती
झरने सी शीतल है माँ
उसकी आंखें तुझे ढूढती
तुझे याद करती है माँ
लौटकर आ उसके आंचल में
बाट जोहती प्यारी माँ

प्रियंका शर्मा

लक्षमी निवास,

169,जनकपुरी,हाऊसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर(राज.)
मो.- 9414224282

Facebook - / manoj sharma

हिंदी और अंग्रेजी से एम. ए.,और पी. जी.डी.सी.ए. करके मुरैना मध्यप्रदेश मे अपना स्कूल चलाने वाले **मनोज शर्मा मुरैना** एक अच्छे कवि भी हैं विविध पत्रिकाओं मे उनकी लघुकथा और गज़लों का प्रकाशन हुआ है **- संचालक**

..............गज़ल........1................

इस उजड़े गुलषन की तू किसे दुहाई देगा,
मुर्दों की बस्ती है तू किसे सुनाई देगा।
बाहर तो नफ़रत की आँधियाँ खड़ी हैं हरदम,
तिनके–सा तेरा क़द तू किसे दिखाई देगा।
खादी में, खाकी में और गेरुआ में अब तो,
कौन यहाँ ज़िंदा है, तू किसे दवाई देगा।
जिसको हम कहते हैं न्याय की यहाँ पे देवी,
आँखों पे पट्टी है, तू किसे सफ़ाई देगा।
कलयुग के इस गंदे दौर में ज़रा देखो तो,
सबके सब काफ़िर हैं तू किसे ख़ुदाई देगा।

काफ़िर – नास्तिक, ख़ुदाई– ईष्वरत्व

..............गज़ल........2...............

बद से अब बदतर हैं गुलषन के हालात,
इक घर में बरकत है इक घर में ख़ैरात।
पेचोख़म बैठ गये खादी पहने साँप,
डसते ख़ूब वतन को जब तक रहते दाँत।
मनसब जो होता लाचारों को इम्दाद,
खा जाते हैं भेड़िये नामुमकिन सौगात।
चैन–सुकूँ की जड़ काटे मज़हब की बात,
होती रहती घर–घर दहषत की बरसात।
दौलत के ख़ंज़र से जख़्मी हर ईमान,
महँगी कोई सस्ती बिकती हर औकात।

अब न इमामों का है दूजा कोई काम,
सत्ता में रहने गठजोड़ करे दिन–रात।
किसकी कैसी फ़ितरत अब मुष्किल इंतिख़ाब,
बाहर से ज़ाहिद सब अंदर से कुख़्यात।

बरकत–समृद्धि, पेचोख़म– कुंडली, मनसब– बँटना, इम्दाद– अनुदान, इमामों– नेताओं, फ़ितरत–स्वभाव, इंतिख़ाब– चुनाव, ज़ाहिद– संत

..............गज़ल........3..............

इस धरती अम्बर का मिलन होगा कैसे,
मिट्टी की किस्मत में सुमन होगा कैसे।
वो कहते हैं हमसे चलो पूजा कर लें,
भूखें हैं पेट बहुत भजन होगा कैसे।
हर मूरत बेज़ाँ है ज़रा छूकर देखो,
बस कंकड़–पत्थर को नमन होगा कैसे।
घर–घर में कीचड़ है नीचे से ऊपर तक,
हम भी तो लथपथ हैं हवन होगा कैसे।
ज़ालिम है दुनिया अब कली तोड़ लेती है,
खुषबू से फूलों का लगन होगा कैसे।
जुल्म–सितम की आँधी यहाँ चलती रहती,
खुषियों से ख़ूपल–भर में आग लगे धुँआ बढ़ता जाये,
ज़ोर हवा का इतना सहन होगा कैसे।

मनोज शर्मा

श्याम मैरिज होम के बगल वाली गली, वनखण्डी रोड़,
गोपालपुरा
मुरैना (म.प्र.) 476001
मोबाइल नं.–09993696507, 09300644924

आशु सिंह "अमिट"

:: आँसू नहीं हूँकार भर ::

नादान बन कर न जाने क्यो,
चुपके से वो सब सहती है।
बस इसी खामोशी के कारण,
न जाने कितनी बहने छलती है।

कभी मरती शराबी पति के हाथो,
कभी दहेज के लिये जलायी जाती है।
कभी प्यार के छलावे में आ कर,
"वो" चुपके से बिक जाती है।

फिर क्यों हसकर चल देती हो,
क्यों खामोशी से सब सहती हो।
शायद खुद पर यकिन नहीं,
तभी घुट–घुट कर जीती हो।

क्या तेरा कुछ भी वजूद नहीं,
या "अमिट" बनने की नहीं अभिलाषा।
शायद इस पुरूष प्रधान समाज में,
दफन हो गई तेरी जीने की आसा।

हे सृष्टि रचने वाली,
मत नारी की गरीमा को लज्जा।
शेरनी की तरह दहाड मार,
और असंख्य नारियों को तू जगा।

संपर्क- **आशु सिंह "अमिट"** प्लोट न013, 013,रमन वाटिका, खिरणि फाटक रोड,रोड,झोट्वाडा , जयपुर मो.- 9929141414

*मुम्बई के युवा कवि डोन **दुर्गेश दुबे "प्रेमी"** श्रृंगार और हास्य के रचनाकार हैं सब टी.वी. पर वे अपनी रचनाओं से अपना परिचय दे चुके हैं उनकी मधुर रचनाऐं सीधे शृंगार बरसाती है ..... **संचालक***

यारों इश्क है अजब बीमारी इस से बचके रहियो तुम

यारों इश्क है अजब बीमारी इस से बचके रहियो तुम
किसी को जानू कहने से अच्छा दीदी कहियो तुम

इस बीमारी मे बन जाता है हर आदमी येडा
बाद कहीं दिखे चने जलेबी कहीं बनाता पेडा
सच है इसमे बडा है दर्द आखिर दर्द को सहियो क्यूं
यारों इश्क है अजब बीमारी इस से बचके रहियो तुम

प्यार मोहब्बत ने जाने किस किसकी खाट लगाई
चाहे मजनू हो या रांझा सबकी व्हाट लगाई
इसकी गली से गुजरो भी तो इससे बचके आइयो तुम
यारों इश्क है अजब बीमारी इस से बचके रहियो तुम

इस बीमारी से पहले तो मैं था सीधा -साधा
जब से रोग लगा है देखो हो गया हु मैं आधा
अगर जो गलती जान करोगे समझो देश से जईयो तुम
यारों इश्क है अजब बीमारी इस से बचके रहियो तुम

-दुर्गेश दुबे "प्रेमी"

Facebook - kavi durgesh dubey premi

मोबाइल ने है किया बवाल..............

जब देखो तब आये मैसेज आये है मिसकाल
मोबाइल ने है किया बवाल.....................2
सुबह खुले जब आँखे उसकी मोबाइल पर जाए
छोटा सा मिसकाल करे और मंद-मंद मुस्काये
एक स्वीट स्माइली के संग गुड मोर्निंग है भेजे
गुड नाइट जब तक ना होती काल मी काल मी बस गाए
काल बैक करने पर वो है पूछे बहुत सवाल
मोबाइल ने है किया बवाल.....................2
दिनभर टिप- टिप मैसेज करके हाल चाल है लेती
रिप्लाइ जो ना करते तो धमकी भी दे देती
जाओ मुझसे बात ना करना धमकी ये दे डाले
हमे डालकर टैंशन मे खुद तो है वो मजे लेती
हमे तंग करने को मैसेज पैक वो लेती डाल
मोबाइल ने है किया बवाल.....................2

हर दो घंटे बाद तो उसका मिसकाल आये
जो ना किया काल बैक तो शामत मेरी लाये
हर एक नेटवर्क ओपरेटर हो जाता है उस्से खुश
मेरी वाट लगाकर के उनको प्रोफिट पहुंचाये
बिल भर भर कर पापा मेरे हो गये हैं कंगाल
मोबाइल ने है किया बवाल.....................2

अजब हो गया है अजब हो गया है........

दुर्गेश दुबे "प्रेमी"

अजब हो गया है अजब हो गया है
तेरा मुस्कुराना गजब हो गया है
तेरा मुस्कुराके वो जुल्फें बनाना
हसी अपनी मुस्का से जादू चालाना
तेरे पास आना सबब हो गया है
अजब हो गया है अजब हो गया है

तेरी सहमी सहमी सी बातें वो करना
मेरा तेरी हर एक अदाओं पे मरना
लजाना तेरा लाजबाब हो गया है
अजब हो गया है अजब हो गया है

ये चांद सा मुखडा सहद सी ये बोली
तुही ह दिवाली तुही मेरी होली
तु ही मेरी रूह तू ही रब हो गया है
अजब हो गया है अजब हो गया है
तेरा मुस्कुराना गजब हो गया है

Facebook/Emailid-
premidubey@gmail.com

Mob- 08652557744, 9222979437

उदेइ गांव के स्पेशल साहित्यकार **आशीष शर्मा "इंतजार"** एक अच्छे हिंदी व्याख्याता भी हैं, उनकी अधिकतम रचनाओं मे एक चोट खाया सा व्यक्तित्व मिलता है ऐसा लगता ह जैसे वो कुछ ढूंढ रहा हो.. उनकी हर रस की रचना एक जीवन की कमी की ओर या खालीपन की ओर संकेत करती है.. वे बताती हैं कि जब जब एक साहित्यकार का मन कुछ भी गलत देखता है तब तब उसकी आह अन्तरमन को उत्तेजित करती हुई कलम के रास्ते शब्द बनकर बाहर निकलती है ...और इसीलिए उनकी रचनाये भी उनके नामकरण इंतजार की सार्थकता को पूर्ण करती है यहां भी कुछ ऐसी रचनाऐं हैं .... **संचालक**

...........इंतजार.................

जिस प्यार के लिये दो आंसू न आये
वह प्यार ही क्या
जब लौटने को घर ही न हो
तो फिर रात भी क्या
जहां याद करनेवाला कोई ना हो
वहां मुड देखना ही क्या
जब मंजिल ना हो मालूम
तो फिर राह भी क्या
जहां झुकने से भी ना मिले "आशीष"
वहां झुकना भी क्या
जब प्यार मे रेणु निधि ना मिली
तो ऊषा की पूजा भी क्या
जो ना हो सके पूरा स्वप्न
फिर उसकी चाह भी क्या ....और....
जो सूखे को देखकर भी न उमडा "इंतजार"
वो फिर घनश्याम ही क्या

आशीष "इंतजार"

हाँ मैने देखा हैं !.....

हाँ देखी मैने दुनियादारी-
कांटों के साये में फूलों को पलते देखा हैं
'दिन के ठेकेदार सूरज' को तपते देखा है !
देखा मैने दीवानापन -
प्रेम दीवानों को सडकों पर पिटते देखा हैं!
पिटे हुए दीवानों को हँसते भी देखा हैं!
कोई बात उगलदे दिल तो दिल को रोते देखा है!
मोहब्बत के दीवानों को बाजारों में लुटते देखा है!
अपनों की महिफल में दिल को
असिधारा पर चलते देखा है
अपनों के अनजानेपन पर इस मन को रोते देखा है!
अंधेर रातों में अपना साया भी पराया होते देखा है!
कोमल हाथों से फूलों को नुचते देखा है!
अपनी दीवारों से फूटा सिर देखा है
घर की दीवारों में 'आशीष' को लुटते देखा है!
परसुख से लोगों को रोते देखा है
घर के चिराग से घर को जलते देखा है
बेवसों को खून के आंसू रोते देखा है
जीवन के अस्ताचल में इज्जत को बढते देखा है
रात में तो लुटेरों से लुटते रहते हैं लोग
दिन में दारोगा से लुटते हुए लोगों को देखा है!
कांटों के सांये में "आशीष" को पलते देखा है
इसीलिए तो "इन्तज़ार" दिल के भोलेपन में -
आशीष को अपनों से लुटते देखा है

संपर्क - 9024763604

व्यंग्य कलम के धनी साहित्यकार **हनुमान "मुक्त"** की कलम जब चलती है तो पाठकों की हंसी रोके नही रुकती .वे अपनी कलम से वर्तमान को हास्य में बदलते हैं इसीलिये उनकी रचनायें इंटरनेट पर भी काफी पसंद की जाती है .....

संचालक

आंदोलन शादी कराने के लिए.....

एक नगर के कुछ अविवाहित जवान लड़कों ने सरकार से मांग की कि या तो हमारी शादी करवाई जाए या छेड़छाड़ करने की इजाजत दी जाए। उनका तर्क था हम भी आदमी हैं, हमें भी भूख लगती है, हमारी भी आवश्यकताएं हैं, जब जानवर तक को अपनी नैसर्गिक आवश्यकता पूरी करने की आजादी है तो हमें क्यों नहीं? जैसे कि सरकार की आदत है वह ऊँचा सुनती है। सामान्य तरीके से मांगी गई मांग उसके कानों तक नहीं पहुँचती। उनकी मांग भी नहीं सुनी गई। लड़के सरकार के सुनने का इंतजार करते रहे। आखिर जब उनके सब्र का बांध टूट गया तो उन्होंने अपने जैसे युवकों को पीले चावल भेज-भेज कर अपनी मांग के समर्थन में खड़े होने का आग्रह किया।

पीले हाथ होने का वर्षों से इंतजार कर रहे युवक पीले चावल मिलते ही मांग के समर्थन में खड़े हो गए। धीरे-धीरे उन अविवाहित युवकों की मांग ने एक आंदोलन का रूप ले लिया।

युवकों के परिवार जनों का भी इस आंदोलन को हिडन समर्थन था। मांग दिलचस्प थी। मीडिया ने पब्लिक का इंट्रेस्ट देखते हुए अपने स्टूडियो में इस विषय पर विषय-विशेषज्ञों द्वारा चर्चा-परिचर्चा शुरु कर दी। जिसका लाइव टेलीकास्ट किया जाने लगा। चैनलों की टीआरपी बढ़ने लगी।

आंदोलन से जुड़े युवकों को चैनलों पर ला-लाकर उनके तर्कों को दिखाया जाने लगा। समाचार-पत्रों में इस विषय पर संपादकीय लिखे जाने लगे। इनमें से कुछ का मानना था कि युवाओं की यह मांग जायज है। उन्हें भी शादी करने का अधिकार है। आखिर, उनकी शादी नहीं होगी तो वे अपनी नैसर्गिक आवश्यकता कैसे पूरी करेंगे? सरकार को या तो उनकी शादी करानी चाहिए या आवश्यकता पूर्ति करने का कोई दूसरा रास्ता खोजना चाहिए।

कुछ लोग युवाओं की इस मांग को बिल्कुल नाजायज बता रहे थे। उनका कहना था कि जीवन जीने के लिए विवाह करना कोई आवश्यक नहीं। हमारे देश में ऐसे बहुत से लोग हुए हैं जिन्होंने अविवाहित रहते हुए बड़े-बड़े पदों पर रहकर काम

किया है। हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, राष्ट्रपति माननीय डॉ. अ दुल कलाम सहित सैंकड़ों ऐसे लोग हैं जिन्होंने जीवन भर शादी नहीं की। उनकी भी नैसर्गिक आवश्यकता रही होगी, लेकिन उन्होंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया।

देश की राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार राहुल गांधी आज तक अविवाहित हैं, उन्होंने आज तक ऐसी मांग नहीं की। वैसे भी अविवाहित होना कोई अभिशाप नहीं है। दुनिया के अन्य देशों में युवक अविवाहित रहते हैं। यहां भी रह रहे हैं, लेकिन इतिहास गवाह है युवाओं ने कभी इस प्रकार की मांग नहीं की। भारतीय अविवाहित युवाओं द्वारा की गई यह मांग अनैतिक है। इससे हमारे युवाओं का देश में ही नहीं, विदेशों में भी सर झुक जाएगा। धर्म के मठाधीशों द्वारा युवाओं की इस मांग को भारतीय संस्कृति के खिलाफ बताया गया। उनका तो यहां तक कहना था कि ऐसे युवाओं को तुरन्त पकड़कर जेल में डाल दिया जाना चाहिए।

अलग-अलग स्थानों से अलग-अलग तर्क आ रहे थे। कोई इसे जायज तो कोई इसे नाजायज ठहरा रहा था। समाचार पत्रों और टीवी चैनलों पर यही खबर प्रमुखता से आ रही थी। इतना सब होने के बाद सरकार की नींद खुली। उसे सुनाई दिया कि अविवाहित युवा उनसे कुछ मांग कर रहे हैं। सरकार हरकत में आ गई। उसने सम्बन्धित जिला प्रशासकों को पत्र लिखा कि 'कौनसी प्रशासनिक चूक हुई है जिसके कारण अविवाहित युवाओं को इस प्रकार का कदम उठाना पड़ा, अब से पहले भी युवाओं की शादी नहीं होती रही थी। वे भी अपना काम चला रहे थे। फिर अब ऐसा क्या हो गया कि उन्हें इस प्रकार आंदोलन करने के लिए बाध्य होना पड़ा। हमें इस मांग की सच्चाई पर ही शक है। जांच करके यह बताएं कि क्या वास्तव में युवा शादी की मांग करने लगे हैं और उनकी मांग कितनी जायज है? सात दिनों में अब से पहले किए गए समस्त निर्णयों की उच्च स्तर पर समीक्षा करें। हमें इसमें कहीं विदेशी ताकतों का हाथ नजर आता है।'

प्रशासन पूरी तरह चाक-चौबन्द हो गया। गत दिनों हुए निर्णयों की स्वयं जिला कलेक्टरों द्वारा समीक्षा की जाने लगी। समीक्षा में यह निकलकर आया कि गत दिनों प्रशासन द्वारा आस-पास चलने वाले अवैध चकलाघरों को पूरी तरह बन्द कर दिया गया था। स्कूल, कॉलेज और महिलाओं का जहां आना-जाना अधिक

रहता था। वहां गश्त बढ़ा दी गई थी। छेड़छाड़ करने वाले युवाओं को बन्द कर दिया गया था। सुनसान इलाकों पर सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। प्रशासन ने मांग की सच्चाई जानने के लिए आंदोलनकारी नेताओं से इस बारे में पूछा, 'क्या प्रमाण है कि तुम्हें शादी करने की नितान्त आवश्यकता है और तुम ही इसकी मांग कर रहे हो?' युवा नेता बोले, 'कहें तो यहीं प्रत्यक्ष प्रमाण दे दें।' प्रशासन उनकी प्रत्यक्ष प्रमाण की क्षमता से घबरा गया। बोला, 'नहीं-नहीं। हम आपकी आवश्यकता और क्षमता से वाकिफ हैं। वह तो सरकार के ऐसे निर्देश थे इसीलिए हमें यह सब पूछना पड़ा। आप जा सकते हैं। हम सरकार को आपकी आवश्यकता और क्षमता के बारे में बता देंगे।'

प्रशासन ने सरकार को लिखा कि हमारी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि युवाओं को विवाह करने की सख्त आावश्यकता है और वे इसकी मांग कर रहे हैं। अगर उनकी आवश्यकता पर अविश्वास किया गया तो वे इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देने लग जाएंगे। अब से पहले अविवाहित रहने वाले युवाओं की संख्या बहुत कम रहती थी। वे संस्कारों के कारण ऐसी मांग उठाने में हिचक महसूस करते थे लेकिन अब ऐसे युवाओं की संख्या में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही है। साथ ही इन्होंने शर्म हया भी ताक पर रख दी है। इसीलिए इनकी मांग जायज भी है। इसका प्रबंध करने की नितान्त आवश्यकता है। साथ ही गत दिनों हुई प्रशासनिक चूक से भी सरकार को अवगत करवा दिया गया था। सरकार ने जिला प्रशासन के पत्र को पढ़ा और इस पर टिप्पणी कर इसका हल निकालने के लिए एक समिति को सौंप दिया। समिति ने अथक अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि युवाओं की मांग बिल्कुल जायज है। उन्हें इसकी आवश्यकता भी है। जब जानवर तक अपनी नैसर्गिक आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए स्वतंत्र हैं तो वे क्यों नहीं? इसकी पूर्ति करना सरकार और समाज का नैतिक दायित्व है लेकिन युवाओं की शादी कराने के लिए युवतियां कहाँ से लाई जाएं? भ्रूण हत्या के कारण लिंगानुपात बिगड़ गया है। प्रत्येक युवक को युवती दिलवाना असम्भव है। युवतियाँ कहीं कल-कारखाने या प्रयोगशाला में तो बनाई जा सकती नहीं और ना ही उन्हें किसी अन्य देश से आयातित कर मंगाया जा सकता है। जिस स्थिति का आज सामना कर रहे हैं उससे भयावह स्थिति भविष्य में आने वाली हैं। अगर दो युवकों की एक युवती से शादी करने का प्रस्ताव समाज

और युवतियाँ मान लें तो इसका हल निकल सकता है। अन्यथा युवाओं की पहली मांग की पूर्ति करना सम्भव नहीं लगता।

दूसरी मांग जिसमें वे युवतियों से छेड़छाड़ करने की इजाजत मांग रहे हैं, यह उनकी निर्लज्जता की पराकाष्ठा है। जब वे इस प्रकार की मांग कर सकते हैं तो वे यह भी कह सकते हैं कि हमारे लिए वैश्यालय खोला जाए। जहां आने-जाने पर हमारे लिए किसी प्रकार की कोई पाबंदी नहीं हो। बल्कि उसका प्रबंध भी सरकारी तौर-तरीकों से लाईसेंस प्रणाली से किया जाए।

समिति युवाओं की मांगों को तो जायज मानती है लेकिन अभी उनकी पूर्ति करना किसी भी स्थिति में जायज नहीं है। समिति का मानना है कि समाचार-पत्र पत्रिकाओं, टीवी चैनलों पर विज्ञापन देकर, सामाजिक स्तर पर परिचर्चा करवाकर ऐसा वातावरण तैयार करवाया जाए जिससे युवाओं की जायज मांग समाज को भी जायज लगे। और उसकी पूर्ति कर सकने के समस्त माध्यम जो आज नाजायज लग रहे हैं वे भी जनता को जायज लगने लग जाएं। अगर आवश्यकता पड़े तो इसके केम्पेन (प्रचार-प्रसार) के लिए विदेशी कम्पनियों की मदद भी ली जाए। तब तक के लिए प्रशासनिक स्तर पर जो चूक की गई है उसे दुरुस्त कर युवाओं को थोड़ी बहुत राहत देने का प्रयास करे जिससे उनके सर में चढ़ रही गर्मी से उनका दिमाग खराब ना हो। अविवाहित रहने के फायदे और अन्य नुस्खे जिनसे आसानी से बिना विवाह किए काम चलाया जा सकता है, के बारे में उन्हें बताकर जागरुक किया जाए। समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में आ रहे विज्ञापन जिनको पढ़कर, देखकर अविवाहित युवाओं को बेचैनी अनुभव होती हो उन्हें भी प्रकाशित होने से रोका जाए। सरकार ने समिति की रिपोर्ट पर अमल करना शुरु कर दिया है। सभी जिला प्रशासकों को इसकी पालना करने के आदेश के साथ रिपार्ट भेज दी गई है।

हनुमान "मुक्त"

मो. -

सहित्यकार **अवधेन्द्र "दाधीच"** विविधा परिवार के पूर्व रचनाकार है वे विविध पत्र पत्रिकाओं में छपते रहते है,उनकी रचनाओं का अपना अलग ही रंग है..... - **संचालक**

सांसे भी यारों बिकने लगी है.....

उपवन की कलियाँ , बिखरने लगी है
खिलने से पहले तडपने लगी है
बसंत से पहले पतझड लगा तो
वीरानों में उपवन बदलने लगे हैं

कोकिला की धुन भी बदलने लगी है
कौओं की कर्कश भी सजने लगी है
फूलों के खिलने से पहले ही अब तो
बगिया भी देखो उजडने लगी है

सावन भी अब तो पतझड सा लगता
भँवरा कभी ना अब गुनगुनाता
आंखों से अब तो गिरता है झरना

देखा है हमने भी दीपक का बुझना
हिमालय भी अब पिघलने लगा है
मुकुट हिंद का अब सुलगने लगा है
राम राज्य बनने से पहले ही देखो
हर कोई रावण बनने लगा है

तूफानों मे वायु बदलने लगी है
घटाओं से आँसू बरसने लगे हैं
जीवन की सांसे बिकने लगी तो
रावण भी अब तो पुजने लगे हैं
नदियों में पानी सिकुडने लगा है
सागर भी शहरों मे आने लगा है

मानव की राहें बदलने लगी तो
होठों से मदिरा निकलने लगी है
लोगों की उम्र छिपने लगी है
बालों में मेंहदी रचने लगी है
वक्त आने से पहले ही अब तो
सांसे भी यारों बिकने लगी है

अवधेन्द्र "दाधीच"

संपर्क -
ग्राम/पोस्ट–कुस्तलां,
सवाई माधोपुर

मो – 9928141087

✧ सूरगढ के युवा सहित्यकार **दीपक अवस्थी** की रचनाएँ प्रकृति,देश, और भक्ति पर आधरित होती है.. - **संचालक**

बदलना ही होगा ....

कब तक सोयेगा तू गहरी नींद में

कब तक मार महंगाई की सहेगा

असाध्य रोग अब भ्रष्टाचार का

कब तक इस परछाई मे रहेगा

नहीं निशा नहीं वक्त प्रमाद का

अब तो तुझे जगना ही होगा

देख दशा इस देश की अब

तुझको भारत अब बदलना ही होगा ...

बचा लो अपने भारत को......

विशेष हो जन तुम इस महि के लिए

तेरे ही लिये रत्न अनेकों सिंधु ने दिए

अब पाना है रत्नों को तुझे अपने लिये

सपनों के जाल से हट तू हकीकत मे जिए

उठा गिरि भुजाओं पर मारूति बनकर दिखा दे

कस ले कटि उर्मियों मे पाठ संघर्ष का तू सिखा दे

त्याग दे सुख मखमलों का पसीनों से कुछ प्यार कर

सीख ले बहाना लहू अपना सिंहों सी तू हुँकार भर

कहीं कूंकना कहीं गूंजना कहीं विषधर भी बनना है

बनना होगा माधव तुझको कालिया पर भी नचना है

रो रही मातृभूमि पहचान लो माँ की आहत को

पौंछ दो आंसू देवधरा के बचा लो अपने भारत को

दीपक अवस्थी ''सूरगढ''

मो. - 9414675391

आलेख : विनय

बोल मेरी मछली आखिर..... ...मौन क्यों जीता रहूँ : **गोपीनाथ चर्चित**

बोलना ही पडेगा... आखिर मौन क्यूं रहा जाए... ऐसा मानते हैं हास्य पर अपनी कलम का लोहा मनवाने वाले वरिष्ठ साहित्यकार एवं हास्य कवि गोपीनाथ 'चर्चित' ... हाल ही अमृत प्रकाशन देहली से प्रकाशित हुआ उनका काव्य संग्रह "**मौन क्यों जीता रहूं**."..उनकी हास्य छवि को कम आंकता हुआ साहित्य और जीवन के वास्तविक धरातल पर उनके कवि मन में हुए वास्तविक उथल - पुथल का रेखांकन प्रस्तुत करता है ! इस संग्रह की पंक्तियां आखिर कवि को स्वंय कहने को वाध्य करती हैं तभी तो चर्चित कह उठते हैं .....

कर दिये टुकडे हृदय के बस उन्हे सीता रहूं
लेखनी से पीडितों की पीर को पीता रहूं !
क्यों सहूं अन्याय किंचित् स्वाभिमानी बन जीऊं
ठोकरें भाती नहीं है मौन क्यूं जीता रहूं !!

व्यक्ति की वेदनाओं , समाज की आवश्यकताओं और कवि मन की बारीकियों को काव्य शब्द-माला में पिरोने मे अपने इस संग्रह से चर्चित काफी हद तक सफल हुए हैं , वे मानते हैं कि कवि जीवन व्यक्ति को समाज और वातावरण की ही देन है ...

2015 का एक श्रेष्ठ साहित्यकार की अभिव्यक्ति कविताओं का अनुपम संग्रह - मौन क्यूं जीता रहूँ

बचपन में सखा अभाव मिले , जब बडे हुए तो घाव मिले !
कोई भी कवि बन जाएगा यदि जीवन में अन्याय मिले !!

इस संग्रह को एक रसों के गुलदस्ते की तरह संजोया गया है जिसका प्रारंभ वंदना के साथ होता हुआ **बसंत और बरसाती भोर** को छूता हुआ सामाजिक बंधनों और मन की तरंगों को समेटे हुए देश प्रेम को रंगता हुआ कुरितियों को दूर भगाता हुआ अंत में शृंगार पर विश्राम लेता है ! ये संग्रह इस बात का भी खंडन करता है कि एक मंचीय कवि या हास्य कवि का मन स्तरीय काव्य लिखने में अक्षम है... मौन क्यूं जीता रहूं ... काव्य संग्रह ने साहित्यकारों के बीच उनके छुपे हुए व्यक्तित्व की झलक का पर्दाफाश हुआ है! साहित्य के इसी अंक में वे अपनी सामाजिक आंतरिक व्यथा को भी व्यक्त करते हैं -

मानव मन रहता क्यूं कमरे मे बंद है
मौसम में फैल रही बारूदी गंध है
सहमी है कोयल कौवे स्वच्छंद हैं
कैसे फिर कह दूं कि आ गया बसंत है !!

अमृत प्रकाशन
1/5170,लेन न.8,बलवीर नगर,शाहदरा,देहली-110032
दूरभाष-22325468

इससे पहले इनका बोल मेरी मछली बाल काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है

चर्चित जी की कुछ रचनाओं का संकलन हमने यहां भी दिया है.... हां , ये रचनाऐं हास्य न होकर मन को संदेश अवश्य देती हैं....रचना में प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम वर्णन कवि ने किया है ......***संचालक***

शनै: शनै: उतर रही बरसाती भोर............

गलियारे गीले हैं छप्पर सब सीले हैं
''ननकू'' को नौंच रहा कौवों का शोर
शनै: शनै: उतर रही बरसाती भोर!!
छप्पर से टपका था पानी जो रात भर
बच्चे सब सिमट गए सूखी ना ठौर
शनै: शनै: उतर रही बरसाती भोर!!
केकी की केका का शब्द नहीं भाता है
पोखर है घर उसका मेंढक से नाता है
आँगन में फैल गया कीचड चहुँ ओर
शनै: शनै: उतर रही बरसाती भोर!!
रतनारी धूप कहाँ मेघों का गर्जन है
बरसाती सील भरी सिहरन है तर्ज़न है
भीगे ही जाना है खेतों की ओर
शनै: शनै: उतर रही बरसाती भोर!!
झरनों पर पिकनिक है मस्ती के प्याले हैं
छान की मढैया में रोटी के लाले हैं

गोपीनाथ चर्चित

भीग गया फूंस और उपलों की कोर
शनै: शनै: उतर रही बरसाती भोर!!

सुन सखि चंदा मोहि चिढाये.......

सुन सखि चंदा मोहि चिढाये
बैरी अम्बर में मुस्काये
ऐसी हँसी हँसै मतवारो विरहन के नयना भर आये!!
शशि मुसकाए ,पवन सताए ,शीतलता मन को पज़राये
हृदय सिंधु की मुक्त तरंगे उन्नत शिखरों को छू जाये
फागुन बीता जाए सखि पर मेरे पिया अभी ना आये
सुन सखि चंदा मोहि चिढाये ,
बैरी अम्बर में मुस्काये
वसुंधरा शृंगार कर रही पीत चुनरिया में हरसाये
खडी धान की बाल हरित ज्यों मस्त यौवना होश गँवाये
मंद समीर उडाता आंचल अल्हड सा यौवन लहराये
सुन सखि चंदा मोहि चिढाये ,बैरी अम्बर में मुस्काये...
आलिंगन हो रहा क्षितिज़ पर बँधे हुए भू व्योम सुहाये
नभ से गिरि अमृत की बूँदे तृषित धरा की प्यास बुझाये
देख देख यह दृश्य हृदय को फागुन में आषाढ तपाये
सुन सखि चंदा मोहि चिढाये ,बैरी अम्बर में मुस्काये...

संपर्क - 9414030941

कवि विनय "भारत"(शृंगार रस)
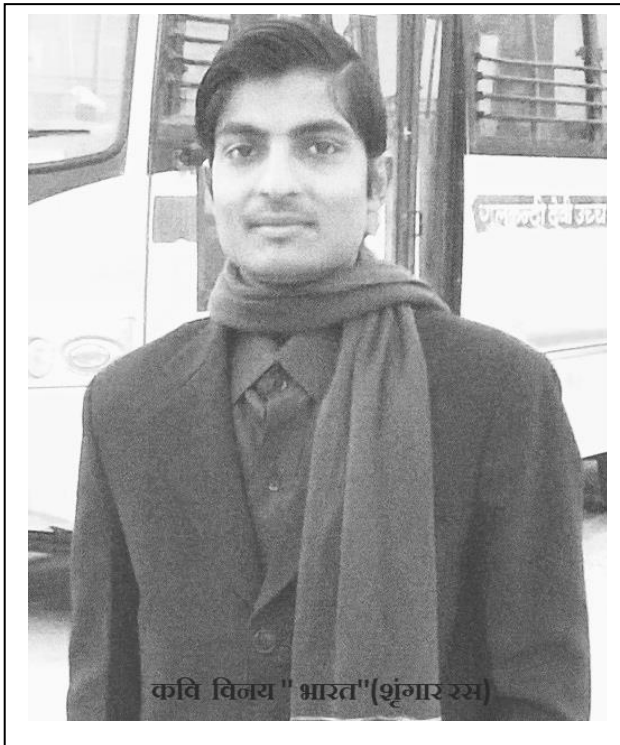
विनय "भारत"

युवा कवि एवं साहित्यकार(शृंगार रस)

(शिक्षा - एम.ए.,बी.एड.)

साहित्य - संग्रह

संपर्क - दशहरा मैदान, स्टेज ,गंगापुर सिटी

ज़िला - सवाईमाधोपुर -322201 मो. - 8233261039

फेसबुक/ kavi vinay bharat sharma

Email- 11vs1992@gmail.com

विकास विद्यार्थी की कलम से....

तेज़ी से उभरकर आए युवा साहित्यकार विनय भारत की रचनाओं ने साहित्य जगत में एक तूफान लाने की कोशिश शुरू कर दी है ... एक छोटे से शहर के इस युवा ने विविधा साहित्य मंच का सपना देखा है, इसी सपने में एक प्रयास है विविधा.., विविधा 2013 के अंक ने विनय को चारों ओर चर्चा में लाकर खडा कर दिया ,तभी से मांग शुरू हुई कि आखिर इसका दूसरा अंक कब आएगा और कैसा होग? जब तक कि कोइ कुछ सोंच पाता विनय ने एक और सपना देखा वह था रसराज शृंगार का और इस रस को एक मंच देने का.. बस रास्ता मिल गया.. कि विविधा का अगला अंक रसराज से भरा होगा..और आज वो सपना पूरा हुआ.. विनय अपने हर अंक में पुराने रचनाकारों के साथ नये रचनाकारों को साथ में लेकर चलते हैं क्यूंकि वे कहते हैं कि जिन्हे कोई मौका नहीं देगा उन्हे मै एक मंच दूंगा... 16 की उम्र से साहित्य लेखन करनेवाले इस युवा साहित्यकार का एक मंच तैयार करने के पीछे कहीं ना कहीं उनके अंदर का संघर्षरत व्यक्ति मिलता है! विनय अकेले ही इतनी बडी जिम्मेदारी लेते हैं और पत्रिका की ओर कदम बढाते हैं! वे इस काम को पैसे के लिए नहीं करते बल्कि ये एक उनका पैशन है या जुनून है जो उन्हे ये करवाता है! इस युवा की रचना में शृंगार मिलता है जो कि वासनियत की दुनिया से बहुत दूर है....हास्य व्यंग्य से साहित्य की शुरूआत करने वाले इस युवा की रचनाऐं व्हाट्स एप... फेसबुक के साथ साथ अनेक वेब साइट पर भी काफी लोकप्रिय होती हैं! साहित्य के महालेखकों के 80 उपन्यास अब तक पढने वाले विनय भारत का जल्द ही एक उपन्यास आनेवाला है जिसके फोलोअर्स अभी से उसकी चर्चा करने लगे हैं.... उनकी कुछ रचनाओं को यहाँ संग्रहित किया गया है.... ....

-. *सह -संपादक*

☆ *दिल की गली में हलचलों का नाम आहटें ....*

दिल की गली का जब कोई दरवाजा खुलता है
चितचोर कोई चोरी करने दिल में घुसताहै
आंखों के रस्ते सीधा दिल में उतर जाता है
कितना भी बचो यार प्यार हो ही जाता है!!1!!
एक दिल का दूसरे से मिलना प्यार होता है
रातों में छुप के आहें भरना प्यार होता है
प्यार नहीं कोई किसी किताब की गज़ल
मिल के विछडना और रोना प्यार होता है!!2!!
दिल की गली में हलचलों का नाम आहटें
रातों में यादों का सैलाब नाम करवटें
दिल ही दिलों में तोडती दुम कितनी हसरतें
दो दिल मिले समाज के माथे पे सलवटें!!3!!
दिल को लगाना कोइ बच्चों का खेल तो नहीं
ये दिल है कोई चायना की सैल तो नहीं
इसको लगाने वालों को रोना सदा पडता
दिल तोडने वालों के लिये जेल तो नहीं!!4!!
दिल तो है खाट्टा- मीठा सा ज्यों आम का अचार
दिल में ना फैला कोई यार अपने भ्रष्टाचार
ज़िंदगी में जवानी और दिल का ऐसा खेल है
मंज़िल है इसकी शादी मंडप इसकी रेल है!!

मैं बताऊं क्या.....

दिल को दिलों से जोडने में बात कुछ तो है
जो तोडना हो दिल तो यार मैं बताऊं क्या ..
तोडकर गुल्लक खरीदा था गुलाब- ए- दिल
वो मोडकर चले गये तो मैं बताऊं क्या.. !
जन्म सात के वादे सात मिनट में ढह गए
कोरे रहे जज्बात तो फिर मैं बताऊं क्या.. !
दो साथी मिले थे दिलों की प्रीत नाव पर
हुआ सुराख दिल में ही तो मैं बताऊं क्या.. !
वो दिल सभी से यूं ही मिला लेते थे सुनो
हम उनको अपना मान बैठे मैं बताऊं क्या.. !
जिनके लिये रुके रहे हम दो पहर 'भारत'
वो सो रहे किसी सेज़ पर तो मैं बताऊं क्या.. !!

दिल को रूलाता है कोई...

दिल को रुलाता है कोई दिल को सताता है कोई
उन्हें याद करके रात भर आँसू बहाता है कोई
फरियाद करता है कोई देकर चला जाता कोई
दिल तोड जाता है कोई दिल जोड जाता है कोई
दिल की नदी में डूबकर भी पार हो जाता कोई !....

उसका वो धीमे- धीमे से बालों को यूं समेटना
कभी बन अबोध बालिका मासूमियत बिखेरना
कैसे शरारती उन पलों को भूल पाता है कोई !.....

गुमनाम रहता है कोई , बदनाम रहता है कोई
कभी पास आता है कोई,कभी दूर जाता है कोई
कभी रूठता इठलाता सा यूं याद आता है कोई
कभी यादें उसकी थामकर पागल हो जाता कोई....
कभी उसकी मुस्कुराहटें कभी दूर तक यूं रूठना
कभी खामोशी के बादलों का देर तक ठहरना
कभी देर तक यूं बोलना कभी शर्म और कभी हया
अब उसकी इन यादों तले ज़िंदगी बिताता है कोई....

वो कमरे की इक दीवार उसकी फोटो को देखा है
या तो किसी की है नहीं या हाथों की मेरी रेखा है
क्यूं दूर वो इतना रहती है क्यूं दर्द इतना देतीहै
उसकी यादों में दर्द की गोलियाँ खाता है कोई...

चांदनी सी रात में अंगडाई लेता दिल सुनो
कभी सोने का बहाना हो कभी करवटें बदलें सुनो
रातों में उठ - उठ कर सुनो कविता बनाता है कोई...

कभी बन भ्रमर बगीचों में दिन रात घूमता कोई
कोयल से मंद-मंद स्वर में गुनगुनाता है कोई
कभी बन मयूर नृत्य कर महफिल सजाता है कोई...

कभी नज़रें उससे मिलती है वो नज़रे झुका लेती हैं
हम बार बार देखते वो यूं ही शर्मा लेती हैं
नज़रे झुकाकर बातों को चुपचाप सुनता है कोई
बनकर कवि यूं मंच पर कविता सुनाता है कोई...
दिल को रूलाता है कोई दिल को सताता है कोई
उन्हें याद करके रात भर आँसू बहाता है कोई ....

मान लेना प्यार है....

दिल कभी जब गुनगुनाए मन ही मन यूं मुस्कुराए
दिल से कोई आवाज आए मान लेना प्यार है...2
धडकनें जब तेज़ धडके ,शब्द जुबां से लडखडाऐं
समझ मे जब कुछ ना आए आए मान लेना प्यार है...2
बारिश में रिमझिम सी बूंदे तन आनंदित करती जाऐं
मन की गलियाँ भीग जाए मान लेना प्यार है...2
मन मचलने की हो इच्छा या हो कोई चिडचिडाहट
शब्द बनकर मन से फूटे मान लेना प्यार है...2
हो पपीहे की पीहूं- पीहूं और कोयल की कुकूं कुकूं
सुन कविता बनती जाए मान लेना प्यार है...2
जब एक चिट्ठी लेकर कोई आकर द्वार खडा हो जाए
उम्मीदों की चाह जगाए मान लेना प्यार है...2
जब इक फूल की बगिया अंदर लाल रंग आंखों को भाए
अरमानों की बारिश भडके मान लेना प्यार है...2
कुछ अनजानी सी बैचेनी रातों में करवट बदलाए
मन उमंगों को जगाए मान लेना प्यार है...2
याद में बंद आंखें अपनी धीरे- धीरे खुलती जाए
सामने वो मुस्कुराए मान लेना प्यार है...2
जिसकी एक झलक पाने को दिल भँवर बन भिनभिनाए
हर जगह नज़र वो आए मान लेना प्यार है...2

बात कुछ तो है....

आओ लौटकर ए निशा तो कुछ कहें
मिलन की आस में मिलन की बात कुछ तो है!
चांद की छटा विना तेरे ओ सुन्दरी
तेरी तमसियत सी कान्ति में बात कुछ तो है!
ये बढता अंधकार छाती चांद रोशनी
रोशनी मे प्रेमी दिल की बात कुछ तो है!
तेरे आते ही निकलते साथ लाखों जुगनु सुन
लेकर मिलन की आस विरह में बात कुछ तो है!
तू आती साथ आता तेरे सबका मामा चांद
यूं मामा - मामी आगमन में बात कुछ तो है
देखती राहें तेरे आने पे प्रियतमा
उस रात देर हो जाने में बात कुछ तो है!
तू लाती जैसे- तैसे चारों ओर अंधकार
तमस के चांदनी मिलन में बात कुछ तो है!
तेरी आगोश मे बदलता रहा करवटें "भारत"
दिल में उठी उन हलचलों में बात कुछ तो है!
वो मिलन की सेज़ तेरी देन अय सजनी
उस रात है भडके जज्बातों में बात कुछ तो है

फेल होने के फायदे-(हास्य व्यंग्य)

फेल होना एक कला है, फेल होना कोई आसान काम थोडे ही है, फेल होने के लिए अपने मन को मनाना पड़ता है हम रोजाना किताबों के दर्शन करें और मन के बार-बार ''पढ़ले-पढ़ले'' कहने पर भी न पढें किताबों को छुऐं भी नहीं, यह बड़ा मुश्किल काम है। अब तक जो लोग फेल होने के फायदे नहीं नहीं जानते थे वे लोग भी क्या जाने कि फेल होने के लिए कितने पापड़ बेलने पड़ते है.... फेल होने के लिए उत्तरपुस्तिका को खाली छोड़ना पड़ता है.... किताबों को पेटी में ताला लगाकर चाबी बाहर कहीं नदी-नाले में फेंकनी पड़ती हैं तब जाकर कहीं फेल होने का महा अभियान शुरू होता हैं। फेल होने में जोखिम भी है यदि किसी घर-परिवार के व्यक्ति को हमारे प्लान का पता लग गया तो गई भैंस पानी में... फिर तो डर के मारे पढ़ना पढे और पास होना पड़े। स्कूल के बहाने बनाकर अनुपस्थित रहने की योजना पर पानी न फिर जाए इसकी भी सावधानी रखनी पड़ती है यानि कि हर तरफ से खतरा ही खतरा....। फिर भी धन्य हैं वे लोग जो इतने खतरे उठाने के बाद फेल हो जाते हैं।

दरअसल ऐसे लोग जो फेल होते हैं ऐसे बंदों को भगवान सोच-समझकर बडे ही आलस से बनाता है। इसका कारण है कि जो फेल होता है वो भगवान को ज्यादा याद करता है। अतः भगवान ने परेशान होकर ऐसे बंदे बनाना छोड़ दिया रही सही कसर सरकार ने पूरी कर दी कि आठवीं तक कोई फेल न हो। इसके बाद भी यदि कोई विद्यार्थी कक्षा आठ में खाली कॉपी देकर फेल करने के लिए परीक्षक को चैलेंज देता है तो ऐसे महापुरूष को तो मैं कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ क्योंकि वही एक ऐसा विद्यार्थी था जिसने फैलियर वर्ग की नाक कटने से बचा ली, आखिर ऐसे लोग कम ही होते हैं जो दूसरों की शान बचाने के लिए अपने एक साल का बलिदान कर देते हैं ये तो लोगों की ही नासमझी है कि ऐसे विद्यार्थी को वे गाली या भला बुरा कहते हैं उसकी बलिदान की पीछे की भावना को नहीं समझते है।दरअसल फेल होने के अनेक फायदे है, फेल होने वाला विद्यार्थी अपने जूनियर से कम्पीटीशन में आगे रहता है क्योंकि जूनियर तो पहली बार ही नया कोर्स पढ़ रहा है लेकिन फैलियर का रिवीजन हो जाता है वह क्लास में सबसे होशियार और अच्छे अंकों से पास होता हैं इसलिए एक ही क्लास में जितनी बार फेल हों उतना ही अच्छा है एक दिन ऐसा आयेगा कि आप बार-बार उसी सिलेबस को पढ़-पढ़कर मैरिट में आऐंगे, वो कहावत तो सुनी होगी करत-करत अभ्यास के....

दूसरा फायदा ये है कि यदि आप सह शिक्षा वाले संस्थान (लडके-लडकियों की एक साथ शिक्षा) में पढ़ रहे हैं तो फिर तो आपको आपकी जूनियर गर्लफ्रेंड के साथ एक ही क्लास में देर तक बैठने का मौका मिलता है आप उसे ये भी कह सकते हैं कि आप केवल उसी के लिए फेल हुए हैं.... इम्प्रेशन अच्छा जमेगा। यदि आप किसी बोर्ड कक्षा में फेल हो जाते हैं तो इसके तो विशेष फायदे है या तो घरवाले आपकी पढ़ाई छुड़ा देंगे आपकी पढ़ाई की तकलीफ खत्म हो जाएगी अन्यथा यदि दोबारा पढ़ने को कहेंगे तो उन्हें आपसे अच्छे अंक लाने की उम्मीद खत्म हो जाएगी फिर आप कम पढाई करके पास हो सकते है।

मैं तो कहता हूँ कि हर क्लास में फेल होते रहिए ताकि प्रिंसिपल भी आपकी इस कला की दाद देने लगे आखिर ये कला हर किसी में थोडे ही हाती हैं। यदि अब भी किसी को फेल होने की तरकीब नहीं सूझ रही हो तो मुझसे फेल होने की कोचिंग ले सकते हैं। फीस भी बहुत कम है जल्दी पधारकर अपना स्थान रिजर्व करें क्यूंकि लेख लिखने से पहले ही पचास-साठ हजार सीटें बुक हो चुकी हैं स्थान कम ही बचे हैं एक बार फेल होकर तो देखिए.... अच्छा लगता है।

एक कवि सम्मेलन में (हास्य-व्यंग्य)

हमारा कुलटा भाग्य कहें या सुलटा भाग्य कि हमें एक कवि सम्मेलन का स्नेह भरा आमंत्रण मिला। देखने में आमंत्रण कम किसी डाकू का ख्खत अधिक लगा। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे जिन्होंने उस आमंत्रण पत्र की भाषा को सुसज्जित किया। पत्र कुछ इस प्रकार था- कवि हम लोगों ने एक कवि सम्मेलन कराने का निर्णय किया है, आप पधारकर कविता पाठ करें।
पत्र को यदि ऐसे समझा जाए तो-

अरे ओ कवि, अपण ने तुम जैसा कवि लोगन कू सुणवा के लिए एक कवि सम्मेलन करवायो है जल्दी पधार जाइयो वरना मैं जाणत हूं तू रोज सब्जी लेवा बाजार जावे है... नी आयो तो किडनेप कर लूंगो। पत्र के नीचे सम्पूर्ण आयोजन समिति के सदस्यों के इतने नाम और दूरभाष थे कि कवियों की संख्या कम आयोजन समिति के सदस्य अधिक थे मानो हर कवि अपनी श्रद्धानुसार जो भी दान-पुण्य करेगा ये उसे मिल बांटकर खा-पी लेंगे।
जो सज्जन पत्र लेकर पधारे वे भी किसी डाकू से कम नही थे। पहले तो हम उन्हें देख घबराए एवं दौड़कर सीधे अंदर घुस गए हमें लगा कि ओसामा लादेन घर में घुस गया है। बाद में पता चला वे वीर रस के कवि थे। रचना के अनुसार उनका शरीर था मुझे सौ प्रतिशत विश्वास है कि इस शरीर के साथ कविता पाठ करते हुए इन सज्जन ने चार पांच मंच तो यूं ही तोड़ दिए होंगे। नाम भी बडा विचित्र था। टमटम भारीभरकम, खैर हमने आमंत्रण स्वीकार किया। भारी भरकम जी हमें आमंत्रण पत्र देकर गुजर गए। कवियों के लिए सुनहरी और श्रोताओं के लिए कत्ल की वह रात आ ही गई। रात आठ बजे कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। बेचारे बीवी की फटकार से परेशान तीन-चार सौ श्रोता कवियों से अपने दिमाग का मुण्डन संस्कार कराने आ ही पहुंचे। मंच के पास पंडाल लगा था और इस रात मंच पर अपना जलवा दिखाने वाले कवि कुर्सियों पर सजा सजाकर रखे हुए थे। एक दो कवि बंधु शरीर में इतना फैले हुए थे कि कुर्सियां और उनका शरीर आपस में कुश्ती कर रहे थे। अंततः उनके शरीर की जीत हुई अथक परिश्रम के बाद उनका पिछवाड़ा मासूम नवयौवना सी कुर्सी पर फंस चुका था। कवियों को काव्य संयोजक टमटम भारी भरकम जी ने मंच पर आमंत्रित किया। एक को छोड़कर सभी कवि मंच पर जा गिरे। शेष बचे हुए एक कवि बेचारी कुर्सी से अपना पिछवाड़ा छुडाने की कश्मकश में लगे रहे। आखिर कुर्सी ने उन्हे अपना मान लिया था अतः कुर्सी भी शरीर को पकड़ बैठी रही, चारों ओर हंसी का माहौल था। दो-चार कार्यकताओं ने कवि जी के पिछवाड़े से कुर्सी को खींचा, कुर्सी रानी ने भी थोड़ी देर ना-नुकुर करने के बाद कोप भवन छोड़ दिया। कुर्सी से पिछवाड़ा इतनी जोर से छूटा कि कवि जी सीधे मंच पर सष्टांग करते नजर आए। कवि जी से पूछने पर पता चला कि वे मंच पर चढने से पहले ऐसे ही प्रणाम करते हैं।
खैर, कवि सम्मेलन का प्रारंभ होने से पहले ही एक महा मुठभेड़ हो गई। दो कवि मंच संचालन करने के लिए आपस में भिड़ गए, अंत में शेष कवियों ने जय और वीरू की तरह सिक्का उछालकर और एक कवि को कवयित्री के पास बैठाने का लालच देकर जैसे-तैसे शांत किया। मंच संचालन करने की महा-मुठभेड़ में टमटम भारी भरकम जी वियजी रहे बडे अभियान से भरे हुए टमटम जी ने इस जीत को ईश्वर की कृपा, कविगणों का सहयोग, और श्रोता जनार्दन का आशीर्वाद बताते हुए स्वयं की जीत न बताते हुए जनता की जीत बताया। इसी जीत पर सभी कविगणों को उन्होनें पार्टी देने की घोषणा भी भरे मंच पर की। दरअसल संचालन करने वाले को अन्य कवियों से एक सौ एक रूपये अधिक मिलने वाले थे। खैर, भारी भरकम जी के रटे रटाए शब्द और कविताओं से कवि सम्मेलन की भूमिका बनी। बीच-बीच में टमटम जी बाबा आदम के जमाने के हसगुल्लों की बरसात श्रोताओं पर करने लगे लेकिन सुन-सुन कर पक चुके श्रोताओं ने इसे नकार दिया यहां तक कि संचालक जी के पैरो के पास अंडा और टमाटर आकर गिरा जिसे देखकर टमटम जी खीझ खीझकर श्रोताओं को तालियां बजाने के लिए बाध्य करने लगे। टमटम जी ने अपने संचालन में बडे-बडे साहित्यकारों और कवियों को याद किया ऐसा

लगा मानो जयशंकर प्रसाद..... प्रेमचंद.... दुष्यंत.... परसाई.... अज्ञेय.... और निराला टमटम जी के लंगोटिया यार थे और इसी के साथ मानो महादेवी...मन्नु भण्डारी...सुभद्रा चौहान जी से इनका कॉलेज के जमाने का अफेयर चला हो। टमटम जी का वश ही नहीं चला अन्यथा वे भारतेन्दू को अपने चाचा का लड़का ही बता देते। खैर, कवि सम्मेलन का आगाज हुआ- पहले कवि युवा थे और रसराज श्रृगांर में डूबे थे। उनकी कविता में श्रृगांर के साथ-साथ प्रेम था उनके सुनाने की कला से प्रीत होता था कि वे पक्के दिल के मरीज थे और उनकी गर्लफ्रेंड उनको धोखा देकर पान वाले चौरसिया के साथ भाग गई थी इसलिए ये गीत लिखकर उन्होंने उसकी याद में कुंवारा ही मरने की भीष्म प्रतिज्ञा की है। कविता समाप्त हुई लोगों के दिल धड़के या दिल का अटेक हुआ ये तो वे ही जानें लेकिन तालियां बजनी थी सो बजती रही।

दूसरे अधेड़ उम्र के कवि थे पता चला वे भी श्रृगांर लिखते थे, युवा कवि के श्रृगांर लिखने का मतलब तो समझ में आता है लेकिन अधेड़ावस्था में श्रृगांर .. शायद भावी जी से सच्चा प्यार नहीं मिला था इसीलिए अब तक तलाश में थे लेकिन वे नही जानते थे कि हर काई अमिताभ नहीं है, खैर उन्होंने कविता शुरू की ....गीत सुनकर लगता था कि अवश्य ही भावी जी ने उन्हें प्रताड़नाऐं दी है उनकी कविता में भावी जी के अत्याचारों को सहने का दर्द था इसीलिए वे अपनी घरवाली से परेशान थे और कोई बाहरवाली ढूंढने की फिराक में थे, शायद इसीलिए वे कवि सम्मेमेलनों में आकर कवयित्रियों के बगल में मंच पर आसन ग्रहण करते थे। उनकी रचना चलती रही और वे पढते रहे... रचना में वे बाहरवाली को याद कर चिल्लाते रहे, बीच-बीच में कनखियों से पास बैठी कवयित्री को घूरते रहे, कवयित्री पर अपने नैनों से वाण चलाते रहे अंततः जन कवयित्री पर उनकी मोहमाया और कविता का नशा जब न चढ सका तब वे निराश होकर अपने स्थान पर आ बैठे। अगले कवि हम ही थे जैसे कुरबानी से पहले बकरे को खूब सजाया जाता है...वैसे हि संचालक ने अपने शब्दो से हमे पेड के झाड पर चढा दिया परिणामस्वरूप हम मंच पर जा टपके। मंच पर हमें देखकर लोगों की हंसी छूट गई कुछ लोगों का और भी कुछ छूट गया हो तो कह नहीं सकते। हम कुछ सुनाते उससे पहले ही माइक ने पीं......पां... सुनाना शुरू किया हमें लगा हमारे आने से माइक भी जोश में है। हम कविता सुनाने लगे लोगों कि तालियां नही बज रही थी शायद विरोधी पक्ष के कवियों ने लोगों के हाथों को बांध कर रखा था, हम भी कम नहीं थे, हमने तालियां बजवाने के लिए उन्हें ईश्वर का वास्ता दिया, कहते ही जो रही सही थी वे भी बंद हो गई। हमें ताली बजवानी थी हमने उन्हें उनकी गर्लफ्रेंड की कस्में दिलाई,कुछ लोगों के हाथ खुले हमें उम्मीद बंधी, हमने अचानक से उन्हें उनकी पत्नि के बेलन का भय दिखाया इतना सुनते ही श्रोताओं के मुख का रंग उड़ गया लेकिन भरे पांडाल में इतनी ताली बजी की हमारे जाने के बाद संचालक ने उन्हें बंद कराया।

हमारे बाद सिलसिला आगे बढाते हुए हास्य कवि चुन्नूलाल फोकटिया मंच पर कूद गए हंसगुल्ले बरसने लगे इसी बीच मंच पर हल्की-फुल्की सुगबुगाहट होने लगी,पूंछने पर पता चला कि कोई कवयित्री जी की मंच के नीचे से चप्पल उठा ले गया है अब कारण या तो ये रहा होगा कि चप्पल ले जाने वाला कवयित्री जी का कोई दिवाना रहा होगा या फिर बीबी के लिए चप्पल खरीदने के पैसे उसके पास न होंगे। खेर, इस दुःखद घटना पर सभी कवियों में शोक की लहर दौड़ गई। आखिर कवयित्री जी की चप्पल थी इसी बीच एक कवि ने इस घटना पर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपने की चेतावनी दी और संयोजक महादेव को दो चार गाली चालीसा के लम्बे-लम्बे पाठ सुनाए इस घटना पर सभी कवियों ने दो मिनिट का मौन रख कवयित्री को काव्यपाठ करने हेतु कहा। कवयित्री ने काव्यपाठ प्रारंभ किया उनकी कविता में चप्पल चोरी जाने का दुःख साफ झलक रहा था, कवयित्री अपने आंसुओं और वेदना को दबाकर बैठी रही हो सकता है वे चप्पल उन्हें अपने पति से भी प्यारी हो शायद इसीलिए काव्यपाठ करते हुए वे बार-बार मंच के इधर-उधर देखती रही और पास बैठे श्रोताओं के पैरो में खोजबीन करती रही।

जब पूरी कविता समाप्त होने तक भी वे अपनी चप्पलें नहीं खोज पाई तो मायूस होकर मंच पर आ बैठी। पास ही बैठे कवि उन्हें सांत्वना देने के बहाने उन्हें छूने

का भरसक प्रयास करने लगे। एक दो अन्य कवि भी अब मंच पर माइक के सामने पहुंच गए उनमें से एक तो इतने पतले थे कि यदि वे माइक पकडकर नहीं रखते तो शायद पंखे की हवा का एक झोंका उन्हें उडा ले जाता, उनकी कविता भी उनकी तरत ही पतली थी, पतलू जी अपने शरीर के फायदे गिनाने लगे, हांलाकि शरीर का पतलापन स्पष्ट दिखता था कि भावीजी ने उनके शरीर को नरक जैसी प्रताडनाऐं दी थी यहां तक कि उनके सिर पर एक स्क्रेच का निशान था जिसे देखते ही पता चलता था कि भावी जी ने नारी अस्त्र बेलन का अच्छी तरह से और अपनी पूरी ताकत से प्रयोग किया था।

खैर, पतलू जी अपनी पतली कविता सुनाकर बैठे ही थे कि हवा के एक झोंके ने उन्हें तेज झटका लगा जिससे वे पास ही बैठी कवयित्री जी से टकराने बच गए और भंयकर दुर्घटना होते होते रह गई हालांकि पास ही बैठे कवि की भौंहे पतलू जी पर तन गई ऐसा लगा मानो पतलू जी यदि कवयित्री जी से टच जाते तो उनके पास बैठे कवि द्रोपदी रूपी कवयित्री की लाज बचाने हेतु भीम बनकर पतलू जी रूपी दुर्योधन से मंच पर ही महाभारत का घमासान शुरू कर देते। इस महा एक्सिडेंट के बाद अंत में संचालक टमटम भारी भरकम अपने शब्दों के मायाजाल को वीर रस में पिरोकर मंच पर जा कूदे। मंच को टमटम भारी भरकम को देखकर ऐसा लगा मानो कुम्भकर्ण की बारी अब आई हो। जैसी वीर रस के कवि से मंच तोडने की आशा थी वह वैसी ही बनी रही। टमटम जी अपने पूरे दम से कविता सुनाने लगे। टमटम जी ने झांसी की रानी से लेकर गांधी जी तक सबको वीर रस में स्मरण किया मानो इन्हीं के आदेश से १८५७ की क्रांती लडी गई हो। टमटम जी ने वीर रस की कविता ऐसे प्रस्तुत की मानो अभी कश्मीर मुद्दे को हल करने के लिए सीधे कारगिल पर जाकर बैंठेगे। टमटम जी मंच पर धमाचौकडी मचाते रहे और उन्हें देखकर पीछे बैठे पतलू जी की हालत पतली होती रही हालांकि टमटम जी घर में पत्नि से डरते थे और मंच पर आदमखोर शेर की तरह उछलते थे।

अंततः कवि सम्मेलन का समापन किया गया। इसी बीच कवियों को लिफाफा देने हेतु बुलाया गया इसीलिए एक दो कवि मंच से कूद पडे और अपने कुरते को मंच की टेबिल पर निकली कील से उखड़वा बैठे कवयित्री जी को संचालक ने अपने जूते उपहार स्वरूप भेंट किए और उनकी दो सौ रूपये की चप्पल के लिए कवियों के लिफाफे से तीस-तीस रूपये की कटौती कर ली गई जिसके कारण संचालक महादेव को दो-चार गाली पाठ फ्री में सुनने को मिला। इसी के साथ सूत जी ने कथा कहना बंद कर दिया।

बोलिए आज के आनंद की जय और कवियों के संसार को भय.........

- ***विनय भारत कवि एवं साहित्यकार***

ये कहानी शुरू होती है... माइक्रो टीचिंग के लैशन से...यह कहानी घूमती है.. जेंट्स बाथरूम से लेडीज की दूरी पर...यह कहानी उडती है क्लास की अनछूई हवा में... ये कहानी जाती है बस पार्क और स्टेशन की भीड- भाड में...ये कहानी जाती है... बी.एड के पांच सौ स्टूडेंट्स के बीच... हां ये कहानी दौडती है साइकिल पर ... ये कहानी वहती है वासनीयत के समंदर से दूर...ये कहानी है एक ऐसे लडके की जिसकी मुलाकात होती है अनन्या से लडते हुए... ये कहानी है एक ऐसी लडकी की जो मिलती है विविध से यूं ही अचानक जो देता है उसे एक शैम्पू ताकि उसके बाल लहराते रहें .. और उनकी कहानी में सांसलेता है ... सच...संयोग और वियोग.. एक ऐसा सच जो दिलों के भंवर में एक अंत छोड जाता है एक ऐसा अंत जो पाठक को पानीकी दो बूंद देकर जाता है आंखों में .लेकिन खुशी के या गम के यही बताने के लिए प्रस्तुत है आपकी अपनी सी कहानी *लव इन बी.एड....दिलों से दिलों तक की दासतां*

Connect and Like with facebook --/love in bachlour of education